प्रकाशक—
'मयूर-प्रकाशन'
झांसी।

प्रथमबार १९४८

मूल्य—डेढ़ रुपया

मुद्रक—
द्वारिकाप्रसाद मिश्र 'द्वारिकेश'
स्वाधीन प्रेस, झांसी।

समर्पण

गांधी स्मारक ग्रंथमाला का तृतीय पुष्प

"रजाकार-पतन"

अपने परम प्रिय मित्र पं० बृजनन्दन जी शर्मा सदस्य संयुक्त प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के कर-कमलों में,

सादर सानुराग समर्पित है।

१६६ सिविल लाइन
१ जनवरी १९४९

सीताराम गोस्वामी
रमेश न्यूज एजेन्सी झांसी

प्रस्तावना

न मे स्तेनो जनपदे, न कदर्यो न मद्यप: ।
नानाहिताग्निनी विद्वान, नच्च स्वैरी स्वैरिणी कुत: ॥

उपनिषत्

तपोभूमि भारत में प्राचीन काल से आर्य शासन पद्धति में सभी प्राणी वायु, अग्नि, सूर्य और चन्द्र किरणों तथा जल की भांति वसुन्धरा एवं प्रकृति के समस्त दातव्यों का उपभोग करने के लिए समान रूप से अधिकारी थे। और शासन विधान अराजक था।

शनै: शनै: आबादी बढ़ी मनुज परस्पर लड़े और स्वार्थपरता जगी और दूसरे की शान्ति को भंग करने की चेष्टाएं कीं— समाज ने उनका वहिस्कार किया।

समाज द्वारा वहिस्कृत होने पर भी दुर्जनों ने जब अराजकता नहीं समाप्त की तब प्रजापति की आवश्यकता पड़ी जिसके नेतृत्व में रक्षकों का संगठन हुआ और उसकी आज्ञा द्वारा अराजकता का विनाश किया गया।

भारत के अच्छे पुराने दिन पुन: आए—परतन्त्र भारत स्वतन्त्र हुआ अत: कुछ न कुछ अराजकता अवश्यम्भावी थी—वह उत्पन्न हुई और उसका अपश्रेय हैदराबाद को प्राप्त हुआ।

अराजकता शान्त होते ही श्रद्धा और अपने पराए की पहिचान होती है और लोग देश और प्राण का मूल्य आंकते हैं यह सब काश्मीर में हो रहा है। धन्य है।

सिखाया तूने ऐ मोहन वतन अपने पै मिट जाना।

तत्पश्चात चैन होगा–धन धान्य, विद्या बुद्धि होगी भारत मां होगी और हम सबके सब उसकी गोद में प्रसन्नचित्त स्वस्थ सम्पन्न सुपुत्र होंगे। वन्देमातरम्।

मयूर प्रकाशन
झांसी

सीताराम गोस्वामी
गांधी स्मारक ग्रंथमाला

लेखक की ओर से—

पाठक बन्धुओ कितनी आप सबकी प्रशंसा किन शब्दों में करूँ, मैं लेखक हूँ मुझे अपनी प्रत्येक कृति सुन्दर लगती है पर मैं अत्यन्त प्रसन्न जब होता हूं जब सुनता हूं पढ़ता हूँ कि मेरी अमुक कृति आप सबको सुन्दर लग रही है। धन्य है मेरे भाग्य जो मैं आपके सम्मुख अपने कुछ अक्षर रख सका।

मैं एक निर्धन युवक हूँ मेरा इतिहास या जीवनी एक जीता जागता उपन्यास नहीं तो आख्यायिका अवश्य ही है। जो यदि अवसर मिला तो आगे पीछे अवश्य जताऊंगा।

रजाकार-पतन प्रस्तुत कर रहा हूँ यह लिखने में कितना समर्थ हुआ हूँ पुस्तक आपके हाथ में है कसौटी पर कसी जा रही है देखिये परखने वाले कैसी परखते हैं।

अच्छा धन्यवाद—अगली कृति "महाप्रयाण" की प्रस्तावना में पुनः मिलूँगा—जय-हिन्द।

सीताराम गोस्वामी
पत्रकार—संघ झांसी

वन्देमातरम्

विषय-प्रवेश

प्रथम अध्याय

प्रिय पाठको !

निजाम का पतन पढ़ने के पूर्व यह बता देना अनिवार्य है कि यह हुआ कैसे, मित्रो भारत स्वतन्त्र होते ही भारत के गृह मन्त्री श्री सरदार वल्लभ भाई पटेल ने भारत के सम्पूर्ण नरेशों को जनता के प्रतिनिधि होने के आधार पर सन्देश दिया कि प्रांतीय करण सब के लिये जनता की दृष्टि से हितकर होगा फल स्वरूप देशी नरेशों ने क्रमश: क्रमशः इसका स्वागत किया और स्वीकार किया।

प्रभुत्व की समाप्ति

तीन जून सन् १९४७ ई० के वक्तव्य द्वारा प्रभुत्व समाप्त कर दिया गया।

देशी नरेशों के समक्ष जनता और उसके नेताओं द्वारा उत्तरदायी शासनों की मांग की गई। नरेशों का शासन अवांछनीय हो गया। सत्याग्रही, अनशनों, और प्रदर्शनों का तांता बंध गया। अन्त में जनता की विजय ही हुई।

भारतीय रियासतों में जहां तहां उत्तरदायी शासनों की धूम प्रारम्भ हो गई जनता के अधिकारों का सम्मान बढ़ा और प्रबन्धकों की न्यूनता के कारण इन रियासतों का एकीकरण हुआ वे प्रान्तों में मिलीं और नए प्रान्त बने इस प्रकार जो हुआ वह आगे स्पष्ट है।

द्वितीय अध्याय

१ जनवरी सन् ४८ के शुभागमन में ही १८००० वर्ग मील की रियासतें जिनकी जनसंख्या ३० लाख तथा आय ८० लाख थी, छत्तीस गढ़ की रियासतों का क्षेत्रफल ३८००० वर्ग मील है। यह उड़ीसा प्रान्त में मिल गई।

एक मास पश्चात ही १ फरवरी को "मकराई" जिसका क्षेत्रफल १५१ वर्गमील है मध्य प्रांत में मिल गई।

मद्रास प्रान्त

२२ फरवरी को "बंगना पल्ली" २५९ वर्ग मील के क्षेत्रफल की रियासत मद्रास प्रान्त में मिल गई।

३ मार्च को ११८५ वर्ग मील २८ लाख रु० की पुदुकोटा रियासत मद्रास प्रांत में मिल गई।

पूर्वी पन्जाब

लोहारी और पटौदी यह दो रियासतें जिनका क्षेत्रफल क्रमशः २२६ वर्गमील और ५३ वर्गमील है पूर्वी पंजाब में मिल गईं।

बम्बई प्रान्त

७१८५ वर्गमील की दक्षिण भारत की १६ रियासतें जिनकी आय ४२ लाख रु० है। यह बम्बई प्रांत में मिल गई इनमें कोल्हापुर शामिल नहीं था।

गुजरात

गुजरात की १८ रियासतों ने भी जिनका क्षेत्रफल २७·०० वर्गमील है जिनकी आय १६५·लाख है यह भी बम्बई प्रान्त में मिल गईं।

तृतीय अध्याय

भौगोलिक स्थिति के आधार पर कुछ रियासतों को संघ अथवा प्रान्त के रूप में निर्माण किया गया है—जो निम्न प्रकार हैं।

"टिहरी" तथा "गढ़वाल" को छोड़ कर पूर्वी पंजाब की समस्त पहाड़ी रियासतों को केन्द्रीय शासन के अन्तर्गत एक हिमांचल प्रदेश बना दिया गया इस प्रदेश का क्षेत्रफल ११,२५४ वर्गमील आय १० लाख है।

सौराष्ट्र संघ

काठियावाड़ की छोटी बड़ी रियासतें तथा तालुके जिनकी संख्या ८६० थी, जन संख्या ४० लाख है। आय ८ करोड़ थी यह सब मिल कर सौराष्ट्र संघ के रूप में बदल गईं।

मत्स्य संघ

१७ मार्च १९४८ को अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली इन रियासतों का मत्स्य संघ बना। श्री धौलपुर नरेश राजप्रमुख बनाए गए और अलवर इसकी राजधानी बनी।

विंध्य प्रान्त

बुन्देलखण्ड की ३४ रियासतों का २ अप्रैल को बिन्ध्यप्रांत बना दिया गया। क्षेत्रफल २४,५९८ वर्गमील आबादी ३६ लाख है। इसके राज प्रमुख रीवां नरेश हैं।

राजस्थान संघ

१८ अप्रैल सन् ४८ को कोटा बूंदी बांसवाड़ा, किसनगढ़, प्रतापगढ़, शाहपुरा और टोंक की रियासतों को राजस्थान संघ के रूप में कर दिया गया।

मालवा संघ

४७,००० वर्गमील, ७२००००० की जन संख्या ८ करोड़ की आमदनी का यह सबसे बड़ा संघ बना। यह सैनिक, औद्योगिक दृष्टि से बड़ा महत्व पूर्ण है।

बिना नाम का प्रान्त

महाराजा पटियाला की राजप्रमुखता में पटियाला, कपूरथला, नाभा, फरीदकोट, जींद, मालेरकोटला, नालागढ़ और कलसिया रियासतों का यह संघ बना इसका नाम विधान निर्मात्री परिषद् रखेगी।

श्री सरदार पटैल की इस महान योजना के अनुसार १५ अगस्त ४८ को हमारे भारत का चित्र आगे दिए नक्शे के रूप में हुआ।

गवर्नरों के प्रान्त	क्षेत्रफल वर्गमील	आबादी	विशेष
मद्रास	१,२७,६१०	४९८.२४	पदुकोई और वागन पल्ले के साथ
बम्बई	१,११,३३७	२५१.७६	दक्षिण गुजरत की रियासतों के साथ
पश्चिमी बङ्गाल	२८,२१५	२१.२०	
संयुक्त प्रान्त	१,०६,२४७	५५.०२	
बिहार	७०,३६८	३६५.४५	खारसवां और सराइकेलवा के साथ
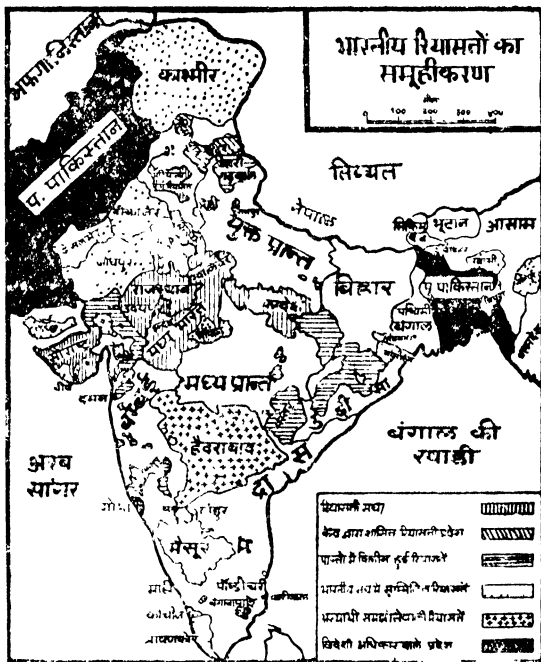
पूर्वी पंजाब	३७,३७०	१३३'६७	लोहारु पटौदी और दुजाना के साथ
मध्य प्रान्त	१,३०,४५१	२०६'४७	छत्तीसगढ़ की रियासतों के साथ
आसाम	५०,३३०	७४'७४	
उड़ीसा	५५,८५०		पूर्वी रियासतों के साथ

केन्द्र द्वारा शासित प्रान्त

दिल्ली	५७४	९,१७

अजमेर मारवाड़	२,४००	५१८	
कुर्ग	१,५९३	१६.८	
हिमाचल प्रदेश	११,२५४	१०·४६	
कच्छ	८,२४९	५०० (कच्छ केरण को छोड़कर)	

रियासती संघ **(कच्छ केरण को छोड़ कर)**

सौराष्ट्र (काठियावाड़)	३३,९४६	३२·०९
मत्स्य	७,५८९	१८·३८
राजस्थान	२९,९७७	४२·६१
विन्ध्य प्रदेश	२४,५९८	३५·६९
मालवा	४७,०००	७·२०
पूर्वी पन्जाब	१०,०००	३·५०

अन्य बड़ी रियासतें

काश्मार	८२,२५८	४०·२१
बड़ौदा	८,२३६	२८·५५
त्रावनकोर	७,६६२	६·०७
कोचीन	१,४९३	१४·२२
मैसूर	२९,४५८	७३·२९
हैदराबाद	८२,३१३	१६३·३८

इनके अलावा राजपूताने की (बीकानेर, जोधपुर, जयपुर,) तथा अन्य रियासतें भी हैं जिनकी भावी स्थिति स्पष्ट नहीं है। ये भी एक वा दूसरे यूनियनों में शामिल हो सकती हैं।

निज़ाम

हैदराबाद की झांकी

चतुर्थ अध्याय

हैदराबाद का निजाम

संसार का इतिहास साक्षी है कि भारत में यह रियासत सबसे अधिक धनी और सम्पन्न रियासत है।

यह रियासत निजाम के हाथ में है—यहां साम्प्रदायिकता का राज्य सदैव से रहा आया है।

गद्दारी नं० १

भारतीय मुगल शासन में मुगल दो प्रकार थे। एक तूरानी दूसरे ईरानी। कमरुद्दीन फीरोज जङ्ग तूरानी थे। सैयद बन्धुओं की कृपा से कमरुद्दीन फीरोज जङ्ग को निजामुल्मुल्क की पदवी मिली। इसी कमरुद्दीन को मालवा की सूबेदारी १७१९ में दी गई मालवा से इसे दिल्ली दरबार आने की आज्ञा मिली यह दिल्ली न जाकर दक्षिण की ओर भाग आया। और मुहम्मद अमीन की सहायता से सैयद बन्धुओं को मरवा डाला।

गद्दारी नं० २

सन १७२१ में राना मुहम्मदशाह का मन्त्री बना और राज की सभी कमजोरियों का पता पाकर वह १७२४ में दक्षिण फिर भाग गया वहां दूसरे पेशवा बाजीराव की सहायता से देहली की राज सेना को हरा कर सूबेदारी हासिल की।

ग़द्दारी नं० ३

बाजीराव की ही सहायता से निजाम ने अपनी राजधानी हैदराबाद बनाई और राजधानी बना लेने के पश्चात् मरहठा राज्य का कर देना बन्द कर दिया।

ग़द्दारी नं० ४

जब पेशवा ने कर बन्द कर देने के कारण दौलताबाद में इसे घेर लिया गया बन्दी करके हाथ बांधे बाजीराव के समक्ष पेश हुआ तो कर की पाई पाई अदा करने की सपथ ग्रहण की पर न दी।

ग़द्दारी नं० ५

१७२८ में उपरोक्त कर देना स्वीकार कर लिया और फिर १७३१ में निजाम ने फिर मरहठा राज्य के विरुद्ध विद्रोह किया पर निजाम को फिर मुंह की खानी पड़ी।

१७३८ में फिर विद्रोह किया अन्त में महाराष्ट्र राज्य को चम्बल तक का सारा राज्य देना पड़ा।

१७३९ में नादिरशाह ने दिल्ली लूटी और १७४० में निजाम दक्षिण की ओर आया। १७४८ में इसकी मृत्यु हो गई।

ग़द्दारी नं० ६

मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी का झगड़ा हुआ। मृतनिजाम का नाती फ्रांसी-सीयों से तत्काल मिल गया और गद्दी का मालिक बन बैठा।

ग़द्दारी नं० ७

अंग्रेज़ों का जब बोल बाला हुआ और फ्रांसीसी भारत से लौट कर भाग गए तो १७५९ ई० में अंग्रेज़ों का मित्र बन कर निजाम रहने लगा

बेचारे पेशवा ने रोका जिसके बल पर राज्य प्राप्त किया था कि अंग्रेज़ों से न मिलो यह बड़े क्रूर हैं।

सन १७६१ ई० में मरहठों ने निजाम पर हमला कर दिया और निजाम को बुरी तरह परास्त कर दिया। बाद में सन्धि हुई और कर बढ़ गया।

गद्दारी नं० ८

पानीपत के युद्ध में मरहठे अपनी शक्ति संभाल न सके निजाम ने तत्काल षड्यन्त्र रचा और मरहठों का कर बन्द कर दिया।

नाना फड़नवीस ने फिर युद्ध किया और निजाम अपनी पराजय देख रो पड़ा अन्त में फिर सन्धि हुई और इतनी शर्तें रहीं कि निजाम रोता ही रहा।

गद्दारी नं० ९

भारत के शासकों का कोई ध्यान न रखते हुए लार्ड वेलजली के काल में अंग्रेजों का आश्रित बन गया।

गद्दारी नं० १०

१५ अगस्त ४७ की स्वतन्त्रता आई भारत सरकार के साथ यथाविधि समझौता हुआ और रजाकारों का सङ्गठन करके हिन्दू प्रजा पर अमानुषिक अत्याचार करके हिन्द सरकार के गांवों में उपद्रव प्रारम्भ शांति भङ्ग करके फिर गद्दारी की।

पराजय

निजाम ने पीढ़ी दर पीढ़ी षड्यन्त्र किए पर इतिहास साक्षी है कभी किसी छोटे बड़े युद्ध में बेचारा एक बार भी न जीत सका।

निजाम उसमान अली ने अपनी यह शर्म मिटाना चाही थी सो जनप्रिय भारतीय सरकार ने अबकी ऐसा हराया कि हमेशा हमेशा के लिए वह बुज़्मी समाप्त हो गया।

आर्य सत्याग्रह के नामसे यहां गैर मुस्लिमों के धर्मों पर से लगे प्रतिबन्धों को हटाने के लिए सम्पूर्ण भारत ने एक विशाल सत्याग्रह यहां किया था। भारत के कोने २ से धर्म के नाम पर बलिदान होने के लिए युवक युवतियां वृद्ध और बालक उत्साह पूर्वक वहा पहुंचे। निजाम ने साम्प्रदायिकता के मद में अपने पैसे के भरोसे उन दिनों आर्य संस्कृति को मिटाने में कोई कसर न रक्खी। यह साम्प्रदायिकता की आग उस सत्याग्रह में बुरी तरह बुझाई गई और भारतीय बलियां इसमें पूरी सफल हुईं इस सत्याग्रह का नेतृत्व आर्य समाज द्वारा किया गया था। सहस्त्रों भगिनियों को बन्धु विहीन, स्त्रियों को सुहाग रहित और माताओं को अपने लालों की आहुति इस युद्ध में देनी पड़ी थी।

वहां की जनता इस अग्नि को बुझा न पाई थी कि राज्य की ओर से भारत में अराजकता मारकाट, और लूटमार को प्रोत्साहित करने वाले मुस्लिम लोग को इस राज्य ने सब प्रकार की सहायताएँ दीं; राज्य में कांग्रेस अनियमित घोषित की, जनता न्याय के नाम पर बन्दीगृहों में बन्द की जाती रही। पाकिस्तान के निर्माण के पूर्व यहा जो भी हुआ वह वहां की जनता से सुनते ही बनता है। पाकिस्तान निर्माण के पश्चात उसी साम्प्रदायिक आधार पर जिन्ना की भांति निजाम भी लाल किले पर आधिपत्य करने का स्वप्न देखने लगा उसके बुद्धिहीन साथियों ने इसकी हां में हां मिलाई और रजाकार नाम से कुछ गुंडों का एक दल संगठित किया इस दल को राज्य की ओर से भोजन वस्त्र व्यय और भत्ते तथा विलास की सामग्रियां अप्रत्यक्ष रूप से दी जाने लगीं इन रजाकारों ने राज्य की गैर मुस्लिम जनता पर अत्याचार करने प्रारम्भ कर दिए।

अत्याचारों की पराकाष्ठा हो गई धर्म के नाम पर नवजात शिशु रजाकार चीरकर फेंकने लगे। गैर मुस्लिम बस्तियों को जलाने लगे। धर्म परिवर्तन और बलात्कारों की संख्याएं अनगिनत हो गईं मानव मानव

को भूलकर मुस्लिम और गैर मुस्लिम को पहचानना प्रारम्भ कर दिया गया। यह सब इतना बढ़ा कि भारतीय जनता और भारतीय सरकार दोनों से असह्य हो गया।

भारत के प्राण श्री सरदार पटेल और भारत के भाग्य विधाता श्री राजगोपालाचार्य तथा भारत के एकमात्र सहारे श्री जवाहरलाल नेहरू ने अनेकों संदेशों, वक्तव्यों, और विज्ञप्तियों द्वारा निजाम को इन करतूतों पर रोकने के लिए कहा सुनी की गई। परन्तु लाल किले के आधिपत्य स्वप्न ने निजाम की बुद्धि को भ्रष्ट कर दिया था उनके सलाहकारों ने वहां से भारतीय मुसलमानों को भड़काना प्रारम्भ कर दिया और अपने गुप्तचर तथा गुप्तचरियों को भारत में यथास्थान जहां तहां मुसलमानों को अशांति और हैदराबाद के हमले के समय हैदराबाद के साथ देने के लिए प्रस्तुत किया जाने लगा। भारतीयों का भी प्रारम्भ किया गया। और पर्चे बाजियां भी हुई भारत सरकार ने बुद्धिमत्ता पूर्वक काम लिया और निजाम को निरंतर सचेतना दी।

निजाम के रजाकार संगठनकर्ता कासिम रिजवी ने भारतीय सरकार द्वारा बराबर आदेश संदेश आदि देने के कारण. भारतीय सरकार को कमजोर समझा और हैदराबाद के समीपवर्ती भारतीय ग्रामों पर रजाकारों ने हमले करना प्रारम्भ कर दिए अशांति के बादल बराबर छाए जाते रहे। अन्त में भारत सरकार ने हैदराबाद के अनियमित आदान प्रदान को शांति न हो सकने तक के लिए स्थगित कर दिया। परन्तु फिर भी निजामी रजाकारों ने उपद्रव, बलात्कार आदि बन्द न किए इन सब घटनाओं का संक्षिप्त रूप निम्नप्रकार रहा। जिनको पढ़कर आंखों में रक्त उतर आता है और रोमांच हो जाने के साथ साथ हृदय विदीर्ण हो जाता है।

७ जुलाई सन् १९४८

श्री वैंकटराव ने शांति स्थापित होने तक के लिए आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया।

१० जुलाई १९४८

वाघजाली में १०० रजाकारों द्वारा आक्रमण एक तार कर्मचारी मार दिया गया।

सम्पूर्ण बातों के हेतु प्रो० भंसाली का हैदराबाद को पुनः प्रस्थान।

११ जुलाई १९४८

श्री गुरलिंग शिवाचार्य स्वामी जी ने मुसलमानी भेष में अपना दौरा पूरा कर के बताया कि १० हज़ार आदमी बीदर ज़िला में मौत के घाट उतार दिए गए यहां १ हज़ार स्त्रियां भगाई जा चुकी हैं और करोड़ों की सम्पत्ति लूट ली गई है। पूरा ज़िला वीरान हो गया है। घर जला दिए गए हैं।

६ बजे शाम

श्रीप्रोफेसर भंसाली द्वारा निजामी सीमा में निजाम सरकार द्वारा जाने पर प्रतिबन्ध लगाने के कारण अनशन आरम्भ।

१२ जुलाई बेजवाड़ा रजाकारों ने रेलें लूटीं

बेजवाड़े पर निजाम रेल्वे पैसेंजर २ डाउन ट्रेन पर छापा मारा ५०००) रु० गैर मुस्लिम यात्रियों से छीन लिए गए। जनाने डिब्बे में घुस कर गैर मुस्लिम स्त्रियों को अपमानित किया उन्हें अधनङ्गा कर दिया गया।

१४ जुलाई नागपुर

आज श्री प्रोफेसर भंसाली द्वारा स्त्रियों की रक्षा करने के लिए अनशन अवस्था में ही लोगों से सत्याग्रह की अपील की गई।

२० जुलाई पाकिस्तान

रहस्यमय हवाबाज श्री सिडनी काटन नामक व्यापारी गुप्त सामग्री को हैदराबाद में देकर कराची वापिस चला गया।

२१ जुलाई पिछली खोज

निजामी पुलिस तथा सैनिकों ने रजाकारों के कामों का विरोध करने पर ८० ग्रामीण तथा राज्य कांग्रेस कार्य कर्ता मार डाले।

२२ जुलाई हैदराबाद

श्री रामकृष्णराव, श्री काशीनाथ, श्री रावबैद्य, श्री हरीशचन्द्र, श्री गोपाल रेड्डी, श्री मती ज्ञानकुमारी; हैदा ने एक वक्तव्य दिया। इस वक्तव्य में कहा गया कि दीनदारों ने बलपूर्वक बलात्कार धर्मपरिवर्तन एवं अराजकता फैला दी है राज्य की शक्ति खोखली हो गई है। राज्य की सम्पूर्ण शक्ति इस समय रजाकारों दीनदारों एवं कम्युनिष्ठों पर रह गई है।

२२ जुलाई वैलामकन्यू

नारायण रेड्डी के बङ्गले पर कब्जा करके वहां ५०० स्त्री पुरुषों को बल पूर्वक मुसलमान बनाया गया और नमाज पढ़ने के लिये विवश किया गया—उनकी चोटियां काट दी गईं।

२२ जुलाईं फिलस्तीन

कुछ तय करके अरबों की सहायतार्थ १० लाख रुपये निजाम ने मंजूर किए।

२३ जुलाई हैदराबाद

हैदराबाद राज्य के प्रधान मन्त्री श्री लायक अली ने श्रीसरदार पटेल को डरावनी और धमकी दी कि शायद पटेल यह भूल गए कि हमसे भी ऊपर कोई शक्ति है।

२४ जुलाई हैदराबाद

बलात्कार, लूट, गांवों का भस्मीकरण वाणिज्यमंत्रि ने उपरोक्त कारणों के कारण त्याग पत्र दे दिया।

मैंने ६१ ग्रामों में दौरा किया हर स्थान पर लूट, अत्याचार बलात्कार धर्मपरिवर्तन की धूम है और अधिकारी चुप हैं।

लोहाग्राम

"चिमनराव को एक लकड़ी के खम्भे से बांध दिया गया—और घोर यातनाएं दी गई उनकी आंखें बांध दी गईं और उन्हें गोली से उड़ा दिया गया। (देखिए चित्र नं० १)

नान्देड़

पंडित राव को भी पूर्ववत मारा गया सारा गांव लूट कर जला दिया गया जनता को भाले से छेद कर लूटा गया। (देखिए चित्र नं० २)

बलात्कार की पराकाष्ठा

श्री नारायण चंडावाले की पत्नी पर उनके रिश्तेदारों की उपस्थिति में ही उन्हें विवश करके, उस अबला पर सात बार बलात्कार किया गया धिक धिक ! छिः

प्रचार की नियुक्ति

निजाम ने श्री उसेमडयंग तथा नार्मनस्काट को अपना प्रचारक नियुक्त किया यह दोनों जन प्रसिद्ध पत्रकार हैं यह पायनियर और दूसरे टाइम्स आफ इन्डिया के संपादक रह चुके हैं।

नासिक

श्री डाडामल ने यहां निजाम के संबन्ध में बताया कि हैदराबाद में गुंडा राज्य फैला हुआ है इसलिए भारत सरकार को अपने प्रतिबन्ध लगाना पड़े।

यहां हैदराबाद कांग्रेस का अस्थाई कार्यालय भी खोल दिया गया था।

लखनऊ

भारत के लाल श्री पं० नेहरु ने लखनऊ में एक भाषण देते हुए निजाम को बताया कि आवश्यकता पड़ने पर भारत सैनिक प्रयोग करने को भी उद्यत रहेगा। और कोई हिचकिचाहट न होगी।

२५ जुलाई हैदराबाद

राज्य के बहुसंख्यक गांवों ने निजाम को नालायक करार दे दिया और कर तथा लगान देने से इन्कार कर दिया बड़े बड़े अमानुषिक कष्ट दिए गए कोड़े मारे गए। (देखिए चित्र नं० ३)

कुड़िया डाली गई। (देखिए चित्र नं० ४)

पर अन्य राज्य कर्मचारी वसूली में विफल रहे।

अदनबाग में एन्ड विस्फोट हुआ जिससे बिजली का खम्भा गिर गया।

मद्रास

पं० जवाहरलाल नेहरु ने यहां सार्वजनिक सभा में भाषण देते हुए कहा कि हम हैदराबाद और मुस्लिम लीग से सहानुभूति रखने वालों को कड़ी चेतावनी देते हैं और जताते हैं कि हम आवश्यकता पड़ने पर सैनिक कार्यवाही करने पर चूकेंगे नहीं।

२६ जुलाई लन्दन

निजाम के वैधानिक परामर्शदाता सरवाल्टर मांकटन के सेक्रेटरी श्री रिवर्ड वोमंट अपने साथ यहां एक पत्र लाए हैं इस पत्र में बादशाह जार्ज से अपील की गई है कि "व हैदराबाद के पक्ष में अपने सत्प्रभाव का उपयोग करें, क्योंकि भारत ने हैदराबाद की नाकाबन्दी कर रखी है।

विधान

निजाम ने आज विधान निर्मात्री परिषद के निर्माण को गलत घोषित करके दूसरी अव्यावहारिक घोषणा इस सम्बन्ध में की जिसमें सदस्यों की संख्या तक कम करदी।

२७ जुलाई लन्दन

हैदराबाद के विदेशी मामलों के मंत्री श्री जहीर अहमद तथा डिप्टी सेक्रेटरी श्री मुनीरउद्दीन आज लंदन पहुंचे। यह निम्न आशय की आपत्ति लेकर गए थे। रियासत के पत्र व्यवहार पर भारत में कड़ी निगाह रखी जाती है, तारों को रोका जाता है तथा कानूनी सलाह तक बिना भारतीय अधिकारियों के जाने रियासत से बाहर भेजी जाती हैं।

२८ जुलाई सेवगांव

भारतीय सेवगांव पर १०० रजाकारों की टुकड़ीने हमला किया भारतीय सेना ने यह हमला विफल किया और ३५ रजाकार गिरफ्तार कर लिए गए, तथा शस्त्रास्त्र प्राप्त कर लिए गए।

पांचवा अध्याय

३० जुलाई लन्दन

बृटिश लोक सभा में हैदराबाद की समस्या उपस्थित हुई श्री चर्चिल के इस दृष्टिकोण का कि हिन्दू जो कुछ करता है ग़लत है की आलोचना करते हुए श्री एटली ने कहा कि निजाम ने भारत के साथ समझौता किया हुआ है जिसकी अवधि के कई मास शेष हैं।

श्री एटली ने अपने वक्तव्य में यह भी बताया कि हैदराबाद के शासन में बहुत समय से जनता को कोई अधिकार प्राप्त नहीं है।

३१ जुलाई नई दिल्ली

मिर्जा इस्माइल के दिल्ली शुभागमन पर निजाम की यह चाल कि वह शांति बनाए रखने को सदैव जन भेजता रहा। इस चाल का भंडाफोड़ कर दिया गया।

उत्तरदायी शासन सम्बन्धी शर्तों पर ही भारत बातचीत करेगा जिसके लिए निजाम स्वयं दिल्ली आकर तय करें।

२३ अगस्त करांची

पाकिस्तान में पुनः पुनः हैदराबाद से गुप्त रूप से शस्त्र पहुंचे।

५ अगस्त हैदराबाद

प्रधान मन्त्री मीर लायकअली प्रधान सेनापति जी एडरुस के त्याग पत्र उपस्थित।

शासन पर से निजामियत समाप्त। कासिम रिजवी का मुसलमानों से इत्तिहाद में विश्वास की अपील।

६ अगस्त औरंगाबाद

८३ गांवों ने जो औरंगाबाद जिले के हैं इन गांवों ने अपने निजाम राज्य से पृथक होने की घोषणा के साथ साथ अपनी काम चलाऊ सरकारें भी बना लीं।

भारत स्थित निजामी दूत श्री नवाब जंग यारजंग को नौकरी से अलग कर दिया गया।

१० अगस्त हैदराबाद

एसेम्बली के सात सदस्य और स्वास्थ्य मन्त्री श्री मल्लीकर जुनप्पा ने त्यागपत्र दे दिया और रजाकारों के उपद्रवों की निन्दा की।

१२ अगस्त बृटिश हाई कमिश्नर

भारत स्थिति बृटिश हाई कमिश्नर ने सम्पूर्ण अंग्रेज सैनिकों को निजाम की नौकरी छोड़ने की आज्ञा जारी की जिसका पूर्ण रूप से पालन हुआ।

राजकुमार मोअज्जम ने भी त्यागपत्र दे दिया। निजाम की हालत खराब—पर रिजवी का स्वप्न निरन्तर जारी रहा।

१५ अगस्त हैदराबाद

यहां के ७ मुसलमानों ने भारतीय संघ में शामिल होने की मांग पेश की।

२० अगस्त हैदराबाद

राज्य में लगभग सभी प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्ताओं की चल व अचल सम्पत्ति जब्त कर ली गई।

२१ अगस्त मीरिया

मीरिया द्वारा भारत के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र में मामला भेजे जाने की विश्वस्त खबर भारत को लगी।

२१ अगस्त बैजवाड़ा

रजाकारों की लूटमार पराकाष्ठा पर पहुंचती गई और ६० रजाकारों के शस्त्र दल ने एक तहसीलदार के नेतृत्व में लगभग १०००० रुपये का माल लूटा और ८ व्यक्ति मारे गये अनेकों हताहत हुए।

२३ अगस्त मसयाल

यहां पठान और अरबों ने २०००० हजार रुपये की सम्पत्ति लूटी जिससे १२ गाड़ियां भर कर ले जायी गईं। अनेकों स्त्रियों को उड़ा लिया गया। अनेकों को नङ्गा करके छोड़ा गया था।

गुलबर्गा

अंधाधुन्ध गोलियां चलायीं गयीं सड़कों पर आतङ्क फैला दिया गया। अन्त में कुछ स्त्रियों को उड़ाकर और कुछ के साथ बलात्कार कर भाग गए।

२५ अगस्त लेकसक्सेस

राजा जार्ज ने निजाम को पूर्व वर्जित पत्र के उत्तर में कोरा विवशता का उत्तर दे दिया।

२८ अगस्त जबलपुर

रजाकारों को हैदराबाद के पक्ष में प्रचार करते पकड़ा गया।

२८ अगस्त कृष्णरावपाल

इस गांव में रजाकारों और भारतीय पुलिस में दो घन्टे तक शस्त्रा-शस्त्र मुठभेड़ होती रही और रजाकार हार कर भाग गए।

भारतीय सरकार के रियासती सचिवालय के सेक्रेटरी श्री वी. पी० मेनन ने हैदराबाद को लिख दिया कि राष्ट्र संघ में जाने का कोई अधिकार नहीं।

गैर मुस्लिम जनता पर किए जाने वाले अत्याचारों को भारत सहन नहीं करेगा।

२९ अगस्त नागपुर

आज १९ दिन के पश्चात प्रो० भन्साली ने अनशन समाप्त कर दिया।

३० अगस्त सूर्यपेट, लक्ष्मीपुरम, सिंगवरम, केशवपुरम, चन्दूपाटला, सेरीलोंदा, चित्तलपुर, गौरावरम

इन गांवों में जहां जो मिला मार डाला गया। अनेकों हत्याएं की गईं। स्त्री पुरुष, बच्चा बुड्ढा का कोई ध्यान नहीं रखा गया।

केशवपुरम, मल्लसिंगरम, कोटारपल्ली, रामवरम, लोलीपेट

यह गांव सब एक साथ जला दिए गए, सम्पत्ति, सन्तान सब स्वाहा।

जर्जोरेड्डीगुन, रमन्नागुदम

इन गांवों से ६० स्त्रियों को अपहृत कर लिया गया।

वीरपापदम, अन्नारम

यहां के १८ कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं को मार डाला गया।

३१ अगस्त नई दिल्ली

सरदार पटेल की गर्जना

यथापूर्व समझौते के सामूहिक भंग पर हैदराबाद के विरुद्ध उचित कार्यवाही की जायगी और सरकार इस समय उस कार्यवाही पर सक्रिय रूप से विचार कर रही है।

शहीद शोय बुल्ला

हैदराबाद के राष्ट्रीय पत्र "इमरोज" के सम्पादक को रजाकारों ने कत्ल कर दिया—इस शहीद को कोटि-कोटि प्रणाम।

छटवां अध्याय

४ सितम्बर चान्दापुर

ता० २४ अगस्त ता० २८ अगस्त को चान्दापुर कस्बे पर वायु-
ान उड़ते हुए नज़र आते रहे। जनता में आतंक सा छा गया।

कोडिहाल

भारतीय सरकार की विज्ञप्ति के अनुसार कोडिहाल में भारतीय
[पु]लिस तथा रजाकारों के बीच मुठभेड़ रही।

९ सितम्बर अहमदाबाद

सर श्री सी० पी० रामास्वामी अय्यर ने बताया कि:—

हैदराबाद के साथ संघर्ष अनिवार्य है। प्रश्न केवल समय का है।

९ सितम्बर बम्बई

यहां ५ हैदराबादी जन रजाकार बनाने के अपराध में पकड़े गए

१० सितम्बर हैदराबाद

राज्य में चलने वाले सभी मोटर लारियों कारों पर सरकारी अधिकार
की घोषणा।

नई दिल्ली

पंडित जवाहरलाल नेहरू ने पत्रकारों को यह बताया कि अराजकता और पाशविकता को समाप्त करने के लिए भारतीय सेनाएं निजाम के विरोध करने पर भी सिकन्दराबाद जावेंगी—

११ सितम्बर हैदराबाद

भारत सरकार को भारतीय सेनाओं को सुविधा देने से इन्कार कर दिया गया—

सातवां अध्याय

(देखिए चित्र नं० ५)

भारतीय सरकार द्वारा ता० १३-९-४८ को प्रात: ४ बजे भारतीय सेनाओं ने हैदराबाद राज्य में प्रवेश प्रारम्भ कर दिया भारतीय सेनाओं ने प्रवेश निम्न प्रकार किया।

उत्तर.—इस ओर से प्रवेश करते ही बल्लार शाह रेल्वे स्टेशन पर अधिकार किया—

पश्चिमः—शोलापुर से ३० मील आगे भारतीय सेनाओं ने प्रवेश प्राप्त किया।

पूर्व:—मध्यप्रान्त चान्दा जिले से प्रवेश प्रारम्भ किया गया।

दक्षिण:—मद्रास प्रान्त की ओर से भी प्रवेश हुआ।

१४ सितम्बर वैजवाड़े

वैजवाड़े की ओर से धावा करने वाली भारतीय सेना सिकन्दाबाद से २५ मील दूर रह गई थी।

उत्तर पश्चिम में उस्मानाबाद डिवीजन के जिलों पर अधिकार हो गया।

दक्षिण की ओर से घुसने वाली सेना ने आलमपुर पर कब्जा कर लिया ।

स्वागत

सभी विजयी स्थानों और क्षेत्रफल पर जनता ने स्वागत किया और भारतीय सेना को सम्मानित किया ।

१५ सितम्बर हैदराबाद

भारतीय सेना की प्रगति आज बड़ी अच्छी रही । रजाकार और निजाम की सुध बुध भूल गई और १५ सितम्बर को ही इसी दिन निजाम सेना ने आत्म समर्पण की शर्तें मांगी भारतीय सेना ने इसे अस्वीकार कर दिया तत्पश्चात् बिना शर्त निजाम की सेना ने आत्म समर्पण किया ।

१६ सितम्बर पूना

पूना की ओर से प्रवृत्ति प्राप्त भारतीय सेनाओं ने होमनाबाद से ३० मील आगे प्रगति करली और रास्ते में हर मोर्चे पर सफलता की ।

१७ सितम्बर

हैदराबाद ने पं० नेहरू से रेडियो पर अपील की कि युद्ध बन्द करा दीजिए ।

भारतीय सेना संख्या और शस्त्र बल में काफी है अत: जीत अवश्यम भावी है । पर इससे संसार भर के मुसलमानों में कटुता और घृणा फैल जायेगी । हम तो आज तक भी भारत के प्रति कोई दुर्भाव नहीं रखते और मित्रता के लिए उत्सुक हैं ।

हैदराबाद ईसाई संघ ने पास किया कि निजाम को गद्दी से हटा दिया जाय ।

भारतीय सेनाएं बराबर बढ़ती चली गईं और हैदराबाद सब ओर से घेर लिया गया निजाम की हेकड़ी भूल गई ।

श्री राजेन्द्रसिंह ने निजाम की फौज के सेनाध्यक्ष एल० एल्ड्रूस को अल्टिमेटम देते हुए कहा कि हैदराबाद सरकार के लिए आत्मसमर्पण ही श्रेयस्कर होगा ।

निजाम ने देखा कि पार पाना असंभव है तो उसने श्री कन्हैयालाल मुन्शी को मुक्त कर दिया और आत्मसमर्पण की घोषणा करदी ।

रजाकार संघ विघटित कर दिया गया, लायक मंत्रीमंडल समाप्त कर दिया गया, सुरक्षा परिषद से मामला निजाम ने उठा लेने की घोषणा कर दी ।

हैदराबाद के इस आत्मसमर्पण से ब्रिटेन के चर्चिल पंथियों के कलेजे में धुक धुक मच गई । जो भारत में सांप्रदायिकता के झगड़ों की आशा किए बैठे थे ।

हैदराबाद के आंकड़े

संपत्ति	लगभग ७ अरब रुपये
क्षेत्रफल	८, १, ६९८ वर्गमील
जन संख्या	१, ६३, ३७६३४
हैदराबाद की खास जनसंख्या	७, २८, ७००
आमदनी	१४ करोड़ ८२ लाख
हिन्दू आबादी	१ करोड़ २२ लाख
मुसलमान	१५ लाख ३४ हजार
निजाम का खर्च	६०, ९६, ३०० रुपये
शिक्षा व्यय	८४ लाख ७९ हजार
शासन व्यय	४३ लाख

सैनिक व्यय	८४ लाख ३६ हजार
पुलिस	६७ हजार
चिकित्सा	३२ लाख ३६ हजार

२४ सितम्बर को

निजाम ने रेडियो पर भाषण दिया कि हमको रजाकार संगठन ने इस सब कार्यवाही के लिए विवश कर दिया था और वे रजाकार जब भारतीय सेनाएं हैदराबाद से ४० मील दूर रह गईं तब हमें छोड़ कर भाग गए।

पेरिस में घोषणा कर दी गई कि निजाम ने अपना मामला वापिस कर लिया है और मोइननवाबजंग अब रियासत के प्रतिनिधि नहीं रहे हैं।

२९ सितम्बर, पेरिस

घोषणा की गई कि हैदराबाद का मामला स्थगित कर दिया गया है।

हैदराबाद की जनता के जनमत के आधार पर हैदराबाद मंत्रीमंडल और सरकार बनने की घोषणा कर दी गई।

पूज्य बापू के चरण चिन्हों पर चलने वाले हैं भारत भाग्य विधाता भारत मां के लाल, श्री चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, वीर जवाहर, सरदार पटेल, सरदार बल्देवसिंह तुम्हें कोटि कोटि धन्यवाद।

हैदराबाद संग्राम के सैनानियों तुम्हारे पराक्रम और विशाल युद्ध प्रवीणता की किन शब्दों में प्रशंसा की जाय, शब्द कोष में शब्द नहीं प्राप्त होते हैं। तुम्हें और तुम्हारे सैनानी श्री राजेन्द्रसिंह जी को मूक वाणी द्वारा अनन्त अभिनन्दन।

धन्य ! धन्य !! धन्य !!! भारत देवी का शुभाशीर्वाद।
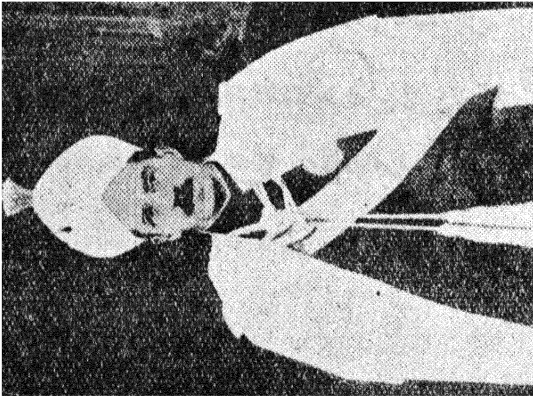
हैदराबाद की बहुमत आबादी पर अर्थात हिंदूनिवासियों पर एक ज़िद्दी मुसलमान निज़ाम शासन कररहा था।

'टाइम शिकागो अमेरिका'

"मैंने जुआ खेला था और मैं हार गया।"

कासिम रज़वी

हैदराबाद के कर्णधार

महाराज राजेन्द्रसिंह

श्री एस० मुकर्जी

मेजर जनरल रुद्र

मेजर जनरल [illegible]

"हम किसी भी ऐसे आदमी को तंग नहीं करना चाहते जो कानून पर चलता है।"

भारत माता का ए ष्टि

हैदराबाद युद्ध का प्रवेश चित्र
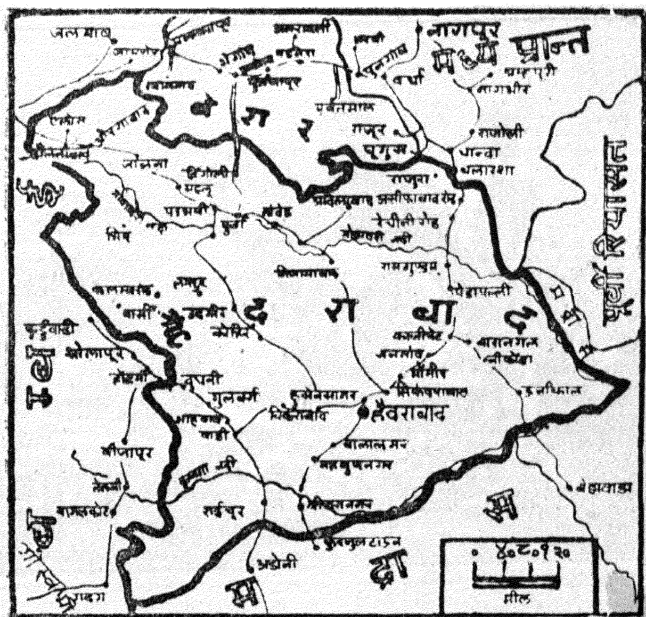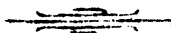
रजाकारों की तलाशी में प्राप्त सामग्री

क़ब्रस्तानों में से निकाले हुए अस्त्र-शस्त्र संग्रह

हैदराबाद रेल व यातायात

भारतीय सैनिकों के अधिपत्य में।

हैदराबाद में भारतीय सैनिकों क

जनता द्वारा हार्दिक स्वागत

हैदराबाद में रजाकार संगठन पूर्णतः समाप्त

समस्त हैदराबाद में सैनिक शासन प्रारम्भ
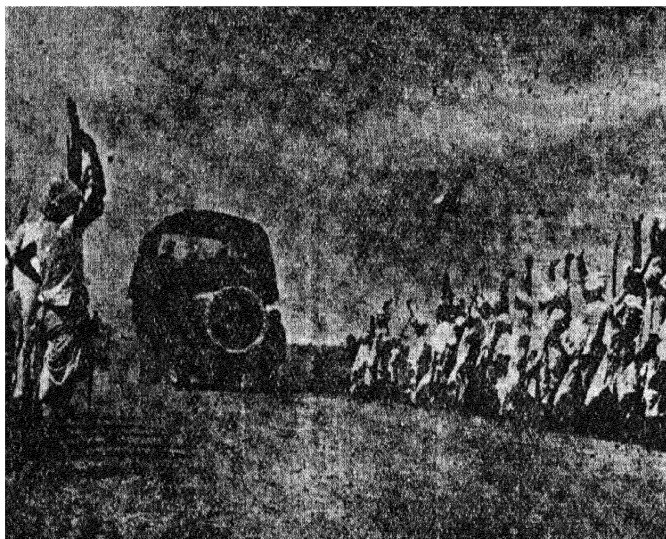
हमारे गृह-मन्त्री सरदार पटेल भी लोह खण्ड महापुरुष हैं

जिन्होंने समस्त त्रस्त रियासती जनता को प्रजातन्त्रात्मक पद्धति के दर्शन कराए।

मेरे प्रिय लाल, तुम्हारी मनोकामना पूरी हो, तुमसे हमें बड़ा भरोसा है, मेरा खण्ड शरीर तुम सबकी राह देख रहा है, मुझे पूर्ण करो बेटा तुम्हारे बल बुद्धि पर हमें बड़ा भरोसा है।

तुम्हारा छोटा भाई क्रुद्ध होगया है वह हमारे दिल के टुकड़े किए हैं बेटा उसे मनाकर डरा कर धमका कर न माने पीट कर अपने साथ लाओ बेटा।

आशा है तुम सब मेरी आशा पर वज्रपात न होने दोगे।

भारतसरकार और निजामका पत्रव्यवहार

भारतीय कमाण्डर की घोषणा

हैदराबाद की जनता के नाम

भारतीय कमाण्डर लेफ्टीनेन्ट जनरल महाराज श्री राजेन्द्रसिंह जी ने हैदराबाद की समस्त जनता के नाम निम्नलिखित घोषणा की:—

"गत कई महीनों से हैदराबाद राज्य के भीतर तथा भारतीय संघ की प्रांतीय सीमा की शांतिप्रिय जनता को रजाकार आतङ्कित करते आ रहे हैं। रजाकारों के सङ्गठन को भङ्ग करने के लिए हैदराबाद सरकार से बराबर प्रार्थना की गई, किन्तु इन प्रार्थनाओं का कोई सन्तोषजनक परिणाम नहीं निकला। निजाम राज्य में हत्याएं, व्यभिचार, अग्निकाण्ड तथा लूटमार का बाज़ार दिन प्रतिदिन गरम होता जा रहा है, रजाकारों की अवज्ञा करने वाली जनता का जीवन अरक्षित हो गया है और साथ ही सीमावर्ती प्रान्तों की भारतीय जनता की शान्ति भी खतरे में पड़ गई है। अब भारत सरकार ऐसी अराजकतापूर्ण स्थिति को बिलकुल बरदास्त नहीं कर सकती।

इस अराजकता का अन्त करने के लिए तथा राज्य के भीतर और समीपस्थ भारतीय क्षेत्रों में शान्तिपूर्ण वातावरण पैदा करने के लिए मेरी

कमान में भारतीय सैनिक हैदराबाद राज्य में दाखिल हो गए हैं। जो लोग अनुशासन में रहेंगे तथा शान्ति और व्यवस्था के लिए भारतीय सैनिकों को सहयोग देंगे, उन्हें हम अपनी सद्भावना तथा सुरक्षा का आश्वासन देते है। लेकिन, जो क़ानून की अवज्ञा करेंगे उन्हें क़ानून की सम्पूर्ण शक्ति का पता चल जायगा। समस्त साम्प्रदायिक-संघर्ष सख्ती से कुचल दिया जायगा।

जैसे ही हमारा कार्य पूर्ण हो जायगा वैसे ही हैदराबाद की जनता को अपने भविष्य के सम्बन्ध में निर्णय करने का पूरा अवसर दिया जायगा। यहां पर हम केवल जनता का भ्रम दूर करने के लिए तब तक रहेंगे जब तक कि राज्य में जन-प्रिय शासन स्थापित न किया जायेगा। तबतक, भारत सरकार द्वारा नियुक्त शासन (सिविल एडमिनिस्ट्रेटर) के सहयोग से, हैदराबाद राज्य का शासन मेरे कमान द्वारा सचालित किया जायगा।

भारत की जनता और सरकार आपको सद्भावना का सन्देश भेजती है। आप शीघ्र ही निश्चय स्वाधीन हो जायेंगे।"

भारतीय फौज़ों का चार रोज़ तक मुक़ाबला करने के बाद ता० १७ सितम्बर को पांच बजे शाम को निज़ाम ने घुटने टेक दिए और ता० १८ सितम्बर को १२ बजे दिन में विधिवत् आत्मसमर्पण करके निज़ामी सेना के कमाण्डर बरार के शहज़ादे ने भारतीय फौज़ों का स्वागत किया।

भारत सरकार और निज़ाम के बीच समझौते सम्बन्धी आख़िरी पत्र व्यवहार तथा भारतीय लोक सभा दिल्ली में पं० जवाहरलाल नेहरू द्वारा दिये हुए वक्तव्य को हम नीचे दे रहे हैं जिससे पाठकों को मालूम हो जायगा कि हमारी सरकार ने शान्तिपूर्ण समझौते की आदि से अन्त तक कितनी कोशिश की, पर निज़ाम की हठवादिता ने प्रयासों पर पानी फेर दिया।

भारत के गवर्नर जनरल के नाम निज़ाम का २३ अगस्त का तारः—

"अपने २१ अगस्त के पत्र के साथ बादशाह का पत्र मेरे पास भेजने के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ। पत्र मुझे गत रात्रि को मिला।

बादशाह ने अपने पत्र में चिन्ता प्रदर्शित करते हुए यह आशा व्यक्त की है कि जो कठिनाइयां उत्पन्न हो गई हैं उनका शान्तिपूर्ण हल निकल आयेगा। अपनी ओर से मैं आपको एक बार फिर विश्वास दिलाना चाहता हूं कि हैदराबाद भारत के साथ मैत्री-भाव से रहना चाहता है। वह किसी प्रकार की दुर्भावना नहीं रखना चाहता क्योंकि अन्ततोगत्वा भारत और हैदराबाद दोनों को अच्छे पड़ोसियों की भांति शान्ति से रहना है। मैं सदैव किसी भी सम्मानपूर्ण समझौते का जो दोनों दलों के लिए सन्तोषप्रद हो, स्वागत करूँगा। इस सन्बन्ध में मैं आपके व्यक्तिगत प्रयत्नों की बहुत क़ीमत करूंगा।"

२६ अगस्त को निज़ाम ने भारत के गवर्नर जनरल के नाम दूसरा निम्नलिखित तार भेजा—

"दिल्ली में नियुक्त हैदराबाद के नये हाई कमिश्नर ने व्यक्तिगत रूप से आपकी उन बातों का सार बताया है जो आपने उनके प्रमाण-पत्र पेश करने के समय उनसे की थीं। मेरे और मेरी रियासत के सम्बन्ध में आपने अपनी जो भावनायें व्यक्त की थीं और जो कृपा तथा मैत्रीपूर्ण बातें कही थीं वह उन्होंने मुझे खासतौर से बताईं। उनके लिए कृपया मेरा धन्यवाद स्वीकार कीजिए। इससे मेरा विश्वास बढ़ जाता है कि आपके व्यक्तिगत प्रयत्नों से दोनों सरकारों के बीच सम्मानपूर्ण समझौता हो जायेगा, जिसकी मैं बहुत क़ीमत करूंगा।"

गवर्नर जनरल ने ३१ अगस्त को निज़ाम को निम्नलिखित पत्र भेजा

"आपने बादशाह के पत्र की प्राप्ति स्वीकार करते हुये जो तार दिया उसके लिये मैं धन्यवाद देता हूँ, मैं यह पत्र दिल्ली लौटने पर लिख रहा

हूँ। मुझे आपको यह आश्वासन देने की आवश्यकता नहीं कि मैं जब कोई झगड़े हों, उनके शान्तिपूर्ण हल का पक्षपाती हूँ। इसलिए हैदराबाद के घटना-क्रम से और शान्तिपूर्ण समझौते के प्रयत्नों के बराबर असफल होने के कारण मुझे बहुत दुख हुआ है। इसका और दूसरे मामलों का निबटारा करना तो मेरी सरकार का काम है, परन्तु शान्तिपूर्ण समझौते के लिये मदद करने में मैं कभी कुछ उठा न रखूंगा।

जैसा कि मुझे और मेरी सरकार को दिखलाई देता है, समस्या का सबसे आवश्यक पहलू हैदराबाद में फैली हुई अरक्षा और आतंक की अवस्था है। यही तात्कालिक प्रश्न है। अतिशयोक्ति की गुञ्जायश स्वीकार कर लेने पर भी, इसमें कोई सन्देह नहीं कि रवानगी फौजों की, जिन्हें अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित होने दिया गया है और जिन्हें सरकारी अधिकारियों की सहायता प्राप्त है, निर्द्वन्द्व कार्रवाइयों ने हैदराबाद और हैदराबाद की सीमा पर रहने वाले लोगों के लिये आतङ्क की स्थिति उत्पन्न कर दी है। सभी वर्गों के लोगों में अरक्षा की भावना उत्पन्न हो गई है और भारत सरकार से हस्तक्षेप की मांग की जा रही है। भारत की जनता के लिए हैदराबाद की हालतों की, जो हैदराबाद के निवासियों से सम्बन्ध रखती हैं और सम्पूर्ण दक्षिण भारत की शान्ति को खतरे में डाल रही है, उपेक्षा करना नैतिक दृष्टि से असम्भव है। आतंक की भावना और अरक्षा को जारी रहने देना सम्भव नहीं है।

इन परिस्थितियों के कारण नागरिक अर्थ-व्यवस्था का अस्त-व्यस्त हो जाना, लोगों का भागना, वाणिज्य व्यापार तथा यातायात का भङ्ग होना और जनता के प्राणों, सम्मान और सम्पत्ति का खतरे में पड़ जाना यह सब हैदराबाद के भारत के ठीक बीच में रहते हुए सहन नहीं किया जा सकता। इसको जारी रहने देने का परिणाम पूर्ण विनाश होना है। आज की उलझी हुई परिस्थितियों में यह याद रखना जरूरी है कि भारत और हैदराबाद की जनता के हितों में कोई संघर्ष नहीं है। वर्तमान समय

में और भविष्य में भी इन सब लोगों का हित एक ही है और भारत सरकार ने तो बराबर यह आश्वासन दिया है कि किसी भी राजनैतिक हल में आपकी प्रतिष्ठा और स्थिति की रक्षा की जायगी। मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप स्थिति पर विचार करें और आतंक तथा अरक्षा की वर्तमान अवस्था का अन्त करने तथा जीवन और व्यापार की साधारण स्थिति की पुनः स्थापना करने के लिए कुछ साहसपूर्ण बुद्धिमत्तापूर्ण कार्रवाई करें। जनता का सुख जिन कामों का तकाजा करता हो उन्हें करने में प्रतिष्ठा की कोई हानि नहीं होती।

आतंक की अवस्था का अन्त करने के लिए, जिसने कि सशस्त्र हस्तक्षेप के लिए इतना ज़ोरदार लोकमत बना दिया है, और फिर से आम जनता में विश्वास क़ायम करने के लिए मैं आपको उस सुझाव की याद दिलाता हूँ जो कि, कहा जाता है कि श्री मिर्ज़ा इस्माईल ने पेश किया था। वे आपके प्रोत्साहन से और आपकी ओर से ही यहां आए थे। वे बहुत अनुभवी और संतुलित विचारों के राजनीतिज्ञ हैं और उन्हें हैदराबाद के मामलों का अच्छी तरह ज्ञान है। साथ ही उनकी आप में उतनी दिलचस्पी है, जितनी कि इस देश की जनता में, जिसमें हैदराबाद की जनता भी सम्मलित है।

आपको चाहिए कि आप रज़ाकार सङ्गठन पर प्रतिबन्ध लगा दें और जैसी कि श्री मिर्ज़ा इस्माईल ने सलाह दी थी, भारत सरकार की सेनाओं को फिर से सिकन्दराबाद में रहने का आमन्त्रण दें, ताकि हैदराबाद और बाहर की जनता के मन में सुरक्षा के सम्बन्ध में कोई शङ्का न रह जाय और इस प्रकार मैत्री की नींव पड़े। यह सब पूरी तरह से आपको स्वयं हल करके करना चाहिए। मुझे सुरक्षा और विश्वास की पुनः स्थापना का कोई दूसरा कारगर तरीक़ा सूझ नहीं पड़ता। आपने हाल में जो क़दम उठाए हैं उनसे पहले की विलम्ब नीतिसे उत्पन्न होने वाली नाराज़ी केवल बढ़ती है। उनसे कोई ठोस लाभ नहीं होता। आवश्यकता शीघ्र

निर्णय और मित्रतापूर्ण विश्वास की है, विवाद तथा विलम्ब की नहीं।

यह पत्र पूर्णतया व्यक्तिगत है और ऐसे व्यक्ति का है जिस पर आपने सच्चे मित्र के रूप में विश्वास प्रकट किया है। आपकी जनता का सुख सुगमता से प्राप्य है। ईश्वर हम दोनों को राह दिखाए।

निज़ाम द्वारा सलाह मानने से इनकार

इस पत्र के उत्तर में ५ सितम्बर को निज़ाम ने भारत के गवर्नर जनरल के नाम जो तार दिया उसका सार यह है:—

"आपको हैदराबाद की स्थिति के बारे में बहुत ग़लत ख्याल हो गया है। मेरे ख्याल से यह उन लोगों के ग़लत प्रचार के कारण हुआ है जो भारत और हैदराबाद के बीच समझौता नहीं होने देना चाहते।

सीमा प्रदेश की स्थिति तत्काल सुधर जायेगी यदि आसपास के प्रांतों से होने वाले आक्रमणों को रोक दिया जाय। सर मिर्ज़ा इस्माईल यहां की स्थिति से अवगत नहीं हैं, क्योंकि वे यहां कठिनता से एक ही वर्ष रहे हैं।

भारतीय सेनाओं के मेरे प्रदेश में रहने देने का प्रश्न ही नहीं उठता मेरी सेनाएं प्राणों और सम्पत्ति की रक्षा करने में पूर्णतया समर्थ हैं।

आपने मुझे पूरी राजनीतिक स्थिति अपने हाथ में ले लेने की सलाह दी है। मुझे भय है कि बदली हुई परिस्थिति में यह सम्भव नहीं है।"

❀ ❀ ❀

निज़ाम के उपर्युक्त तार के बाद ता० ७ सितम्बर को भारतीय लोक सभा दिल्ली में हैदराबाद के सम्बन्ध में वक्तव्य देते हुए भारतीय प्रधान मन्त्री श्री जवाहरलाल नेहरू ने कहा कि भारत एक वर्ष से अधिक समय से हैदराबाद सरकार के साथ शांतिपूर्ण और सन्तोषजनक समझौता

करने का भरसक प्रयास करता रहा है। इन प्रयासों के परिणाम स्वरूप गत नवम्बर में एक वर्ष के लिए एक यथापूर्व समझौता हुआ। हमने आशा की थी कि इसके पश्चात एक अन्तिम समझौता हो जायगा। यह अन्तिम समझौता हैदराबाद में उत्तरदायी सरकार स्थापित होने तथा उस के भारत में सम्मलित होने के आधार पर ही हो सकता था। भारत में हैदराबाद के सम्मलित होने के यह अर्थ हैं कि हैदराबाद रियासत भारतीय संघ में एक स्यायत्त शासन प्राप्त इकाई होगी जिसे वैसे ही अधिकार प्राप्त होंगे जैसे कि अन्य स्वायत्त-शासन इकाइयों को प्राप्त हैं। हमने हैदराबाद के सम्मुख जो प्रस्ताव रखा वह वास्तव में भारतीय संघ में एक सम्मानपूर्ण सहयोगी होने का प्रस्ताव था। हमारा उद्देश्य समस्त देश तथा रियासतों में लोकप्रिय उत्तरदायी सरकार स्थापित कराना था। हमें प्रसन्नता है कि हमारे इस लक्ष्य की हैदराबाद के अतिरिक्त लगभग समस्त भारत भर में पूर्ति हो गई है।

हम यह नहीं सोच सकते कि इस नवयुग में भारत के बीचोंबीच जिसे हाल में स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है, एक ऐसा प्रदेश हो जो इस नव-प्राप्त स्वतन्त्रता से वञ्चित हो और वह अनिश्चित काल के लिए एक स्वेच्छाचारी शासन के नीचे दबा रहे।

हैदराबाद के भारत में सम्मिलित होने के सम्बन्ध में, हमारे लिए यह स्पष्ट था कि हैदराबाद जैसी रियासत, जो चारों ओर से भारतीय प्रदेश से घिरी हुई है तथा बाक़ी दुनियां के लिए जिसका कोई रास्ता नहीं है, भारतीय संघ का एक अनिवार्य भाग हो। इतिहास और संस्कृति की दृष्टि से हैदराबाद को भारत का एक भाग होना तो अनिवार्य है ही, परन्तु भौगोलिक और आर्थिक कारण इस सम्बन्ध में और अधिक मजबूत हैं। अतः उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती चाहे कुछ व्यक्तियों या दलों की इच्छाएं कुछ भी क्यों न हों। हैदराबाद और बाकी के भारत के बीच कोई और सम्बन्ध सन्देह का कारण होगा और वह सदा संघर्ष का एक भय

बना रहेगा। किसी रियासत द्वारा केवल स्वतन्त्रता की घोषणा करने से ही वह स्वतन्त्र नहीं हो जाती, तथा ऐसी घोषणा से यह स्पष्ट है कि अन्य स्वतन्त्र राज्यों से उसके सम्बन्ध हैं और वे राज्य उसकी स्वतन्त्रता को स्वीकार करते हैं।

भारत यह कभी स्वीकार नहीं करेगा कि हैदराबाद किसी राज्य से कोई स्वतन्त्र सम्बन्ध स्थापित करे क्योंकि इससे भारत की सुरक्षा को खतरा होगा। इतिहास की दृष्टि से हैदराबाद कभी स्वतन्त्र नहीं रहा है। आज की परिस्थिति में हैदराबाद व्यवहारिक रूपमें कभी स्वतन्त्र नहीं हो सकता।

हमारे घोषित किए हुए सिद्धांतों के अनुसार हमने यह स्वीकार किया था कि हैदराबाद का भविष्य उसकी जनता निश्चित करे बशर्ते कि जनता को स्वतन्त्र रूप में मत प्रकट करने दिया जाय। परन्तु आज हैदराबाद में जो आतंकपूर्ण स्थिति है उसमें जनता द्वारा उक्त प्रश्न पर स्वतन्त्ररूप में मत प्रकट करना सम्भव नहीं हो सकता।

समझौते के लिए हमने बार-बार प्रयास किए, जो एक दो बार सफलता के निकट तक पहुंच चुके थे, पर अन्त में सफल नहीं हो सके। हमारे समक्ष इसके स्पष्ट कारण हैं। हैदराबाद में कुटिल लोगों का बोल-बाला है, तथा वे लोग भारत के साथ किसी प्रकार का कोई समझौता न करने देने के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ हैं। इन दलों की, जिनका नेतृत्व अनुत्तर-दायी लोगों के हाथ में है, शक्ति वहां बढ़ती जा रही है और सरकार पूर्णतः उनके हाथों में है। रियासत के साधन सभी तरीकों से युद्ध के लिए लगाये जा रहे हैं। रियासत की सेना में बृद्धि की गई है तथा वहां अनियमित सेना को तेजी से बढ़ने दिया जा रहा है। विदेशों से चोरछिपे शस्त्रास्त्र हैदराबाद में मँगाए गए हैं। चोरी–छिपे से हथियार पहुंचाने का यह कार्य, जिसमें बहुत से विदेशी भी सक्रिय रूप से भाग ले रहे हैं, अब भी जारी है। कोई भी देश, जिसकी स्थिति भारत के समान हो भारत के

बीच में स्थित एक रियासत की युद्ध जैसी तैयारियों को बर्दास्त नहीं कर सकेगा। इतने पर भी भारत सरकार ने हैदराबाद से इस आशा से शांति पूर्वक वार्ता जारी रखी कि उससे कोई समझौता हो सके। हमने दूसरी कार्रवाई हैदराबाद के लिए जाने वाली युद्ध सामग्री को रोकने के लिए की।

हैदराबाद में व्यक्तिगत सेनाओं, मुख्यत: रजाकारों ने दिनोंदिन रियासत और कभी कभी रियासत के बाहर भारत के प्रदेशों में भी आक्रमणकारी रूप धारण किया। मैं यहां इस सम्बन्ध में पूर्ण विवरण प्रस्तुत नहीं करना चाहता क्योंकि ये विवरण हैदराबाद सम्बन्धी श्वेत–पत्र तथा अन्य प्रकाशित कागजात में प्रकट हो चुके हैं।

हैदराबाद रियासत के अन्दर उन हिन्दू और मुसलमानों पर, जो रजाकारों के विरुद्ध हैं जो आतंक छाया हुआ है उससे बड़ी गम्भीर स्थिति उत्पन्न हो गई है तथा भारत और भारतीय संघ के सीमावर्ती क्षेत्रों में भी इसकी प्रतिक्रिया हुई है। इस समय हमारे लिए हैदराबाद में बढ़ते हुए आतंक और हिंसात्मक दौर को रोकने का प्रश्न बहुत महत्वपूर्ण है।

रजाकारों के पूरे कारनामों पर प्रकाश डालने में बहुत समय लगेगा, अत: मैं यहां उनकी केवल कुछ ही कार्यवाइयों का उल्लेख करूंगा।

हैदराबाद रियासत में स्थित एक गांव के निवासियों ने अपने मुखिया के नेतृत्व में इन लुटेरों (रजाकारों) का कड़ा मुक़ाबिला किया परन्तु जब उनका गोला बारूद समाप्त हो गया तो लुटेरों ने सारे ग्रामवासियों को तलवार के घाट उतार दिया, गांव को जला दिया और उनके मुखिया का सिर काट कर उसे एक बांस में अटका कर चारों ओर फिराया गया। एक दूसरे गांव में पुरुष, स्त्रियों तथा बच्चों को एक स्थान पर एकत्र किया गया और रजाकारों तथा निज़ाम की पुलिस ने उन्हें गोली मारकर खत्म कर दिया।

ग्रामीणों का एक बड़ा दल जब बैलगाड़ियों द्वारा अपनी रक्षा केलिए भारत की ओर आ रहा था तो उस पर बुरी तरह से आक्रमण किया गया। पुरुषों को अमानुषिक रूप से मारा पीटा गया और स्त्रियों भगा लिया गया।

एक रेलगाड़ी रोक ली गई, यात्रियों को लूटा गया तथा बहुत से डिब्बे जला डाले गए।

सभा को उन हमलों का तो पता है ही जो हमारे उन सैनिक दस्तों पर किए गये जो रियासत प्रदेशों की ओर जा रहे थे। हमारे सीमावर्त गांवों पर रजाकारों के हमले भी सर्वविदित हैं।

कल की प्राप्त रिपोर्टों के अनुसार रजाकारों और हैदराबाद की नियमित सेना ने बख्तरबन्द गाड़ियों से लैस होकर भारतीय सेना पर भारतीय प्रदेश में आक्रमण किया जिसमें रजाकारों और निज़ामी सेना को मुँह की खानी पड़ी। इस हमले में एक निज़ामी बख्तरबन्द गाड़ी बर्बाद की गई तथा हैदराबादी सेना का एक अफ़सर और ८५ सैनिक गिरफ्तार किए गए। इस घटना से हैदराबाद की भारत विरोधी आक्रमण-भावना स्पष्ट होती है।

जब से भारत के विरुद्ध हिंसात्मक कार्रवाई आरम्भ हुई है तब से अब तक प्राप्त सूचनाओं के अनुसार रियासत के अन्दर सत्तर से अधिक गांवों पर आक्रमण किए गए, हमारे प्रदेश में लगभग १५० आक्रमण हुये, सैकड़ों व्यक्ति मारे गये, भारी संख्या में घायल हुए, तथा बहुत सी महिलाओं को भगा लिया गया और उनके साथ बलात्कार किया गया, १२ रेल गाड़ियों पर हमले किए गये, एक करोड़ से अधिक की सम्पत्ति लूटी गई, और लाखों व्यक्ति रियासत से भारत के सीमावर्ती प्रान्तों में रक्षा के लिए आये।

कोई भी सभ्य सरकार भारत के बीचोंबीच में इस प्रकार के अत्याचारों का जारी रहना बर्दाश्त नहीं कर सकती क्योंकि इसका प्रभाव केवल हैदराबाद की न्यायप्रिय जनता के जीवन और प्रतिष्ठा पर ही नहीं पड़ता, बल्कि भारत की आंतरिक शांति पर भी पड़ता है। हैदराबाद में लूट, अग्निकाण्ड, बलात्कार, तथा हत्या के इस दौर से भारत में साम्प्रदायिक भावना उभड़ना स्वभाविक होगा और उससे हमारी शान्ति खतरे में पड़ जायगी। ज़रा सोचिए कि इन परिस्थितियों में हमारे पूर्वाधिकारी क्या क़दम उठाते ? उन्होंने कड़े हाथ से हस्तक्षेप किया होता। ब्रिटिश ताज की सार्वभौम सत्ता के न रहने से हैदराबाद और भारत की उस सत्ता के, जिस पर समस्त भारत की सुरक्षा का दायित्व है, आपसी सम्बन्ध में कोई परिवर्तन नहीं हो सकता। हम अब तक इस आशा से शांत रहे कि हैदराबाद के शासकों में सद्बुद्धि जागेगी और कोई शान्तिपूर्ण समझौता हो सकेगा। परन्तु अब वह आशा विलुप्त हो गई है, तथा रियासत या उसके सीमावर्ती क्षेत्रों की ही शान्ति को ख़तरा नहीं है बल्कि भारत में भी इसका खतरा है।

इस सम्बन्ध में हमारे शान्त रहने की बड़ी आलोचना की गई है। वह कुछ उचित हो सकती है, परन्तु हमने संघर्ष को टालने के सिद्धांत के अनुसार भरसक प्रयास किये हैं। पर हम इन अमानुषिक घटनाओं को देखकर आंखें नहीं बन्द कर सकते और न ही अपने उत्तरदायित्व को छोड़ सकते हैं।

हैदराबाद सरकार ने रियासत में अराजकता का दमन करने में अपनी अनिच्छा और अयोग्यता का प्रदर्शन किया है।

हमारा विश्वास है कि हैदराबाद में इस समय आन्तरिक सुरक्षा तब तक स्थापित नहीं हो सकती जब तक हमारी सेना पहिले की भांति सिकन्दराबाद में न रखी जाय। हमारी सेना के वहां पहुंचने पर जनता में

सुरक्षा की भावना उत्पन्न होगी और व्यक्तिगत सेनाओं की आतंकवादी कार्रवाई समाप्त हो जावेगी।

मैं देश से अपील करता हूं कि हैदराबाद के प्रश्न पर असाम्प्रदायिक दृष्टिकोण से सोचा जाय। मैं जानता हूँ कि साम्प्रदायिक भावनाओं को उभाड़ा गया है, परन्तु फिर भी हमें इस प्रश्न पर साम्प्रदायिक दृष्टि से विचार नहीं करना चाहिए।

हम हैदराबाद में हिन्दू मुसलमान तथा अन्य सभी लोगों की सुरक्षा के लिए सिकन्दराबाद में अपनी सेना भेजना चाहते हैं। यदि हैदराबाद में स्वतन्त्रता आयेगी तो वह केवल कुछ दलों को ही न मिलेगी बल्कि समस्त जनता को मिलेगी।

हैदराबाद से लोग भारी संख्या में जान बचाकर भारतीय प्रदेश में भाग आए हैं। गत कुछ महीनों में इस प्रकार लाखों व्यक्ति भारत आये हैं। मेरी राय है कि लोग हैदराबाद या सीमावर्ती क्षेत्रों से न भागें। यदि मैं वहां हूँ तो मैं निश्चित रूप में वहां से न भागूंगा। गम्भीर संकट का सामना करने के लिए भागने से स्थिति और संकटपूर्ण हो जाती है। इस समय मैं देश से अपील करता हूं कि हमें अपनी शांति स्थापित करनी चाहिए, और जो भी संकट आयें हमें उनका वीरतापूर्वक डटकर सामना करना चाहिए।

ता० ७ सितम्बर को हैदराबाद की धारा सभा में हैदराबाद के उप-प्रधानमन्त्री श्री पिंगले वेंकट रमन रेड्डी ने नेहरू जी के भारतीय लोकसभा में दिये गए उपर्युक्त वक्तव्य का उत्तर देते हुए कहा—"भारत सरकार को यथापूर्व समझौते के अन्तर्गत रियासत की शासन व्यवस्था में हस्तक्षेप करने का तथा सिकन्दराबाद में सेना भेजने का कोई अधिकार नहीं है। मैं यह स्पष्ट कर देना चाहता हूँ कि यदि भारत सरकार यथापूर्व समझौते

की शर्त को तोड़ने का निर्णय करती है तो उसका उत्तरदायित्व भारत सरकार पर ही होगा।"

इसके बाद ता० ९ सितम्बर १९४८ को निज़ाम ने गवर्नर जनरल के नाम फिर निम्न तार भेजा—

५ सितम्बर को जो मैंने तार भेजा था उसके पश्चात् मैं आपसे पुनः अनुरोध करता हूँ कि आप अपनी सरकार को गत जून में बताए गये हैदराबाद के विचार को मानने के लिए राज़ी करें जिससे दोनों सरकारों के बीच अच्छा सम्बन्ध स्थापित हो जाय। मैं आशा करता हूँ कि आप मेरे अनुरोध पर ध्यान देंगे और हमारे सम्बन्ध को बिगड़ने न देंगे।

इसके उत्तर में गवर्नर जनरल ने १० सितम्बर १९४८ को निम्नलिखित पत्र भेजा—

आपके ९ सितम्बर के तार के लिये धन्यवाद। मैंने ३१ अगस्त के अपने पत्र में बता दिया है कि सबसे आवश्यक कार्य रियासत में फैला हुई अशांति तथा भय को दूर करना है। मैंने आपसे पहले ही अनुरोध किया है कि आप स्वतः पहले उचित कार्य करें। मैंने स्पष्ट रूप से भी सुझाया था कि आप रज़ाकार संगठन पर प्रतिबन्ध लगा दें और सिकन्दराबाद में भारत सरकार की सेना को डेरा डालने के लिए आमंत्रित करें जिससे हैदराबाद तथा बाहर की जनता में जान-माल की रक्षा के बारे में कोई संदेह न रह जाय और इस तरह की मित्रता की नींव डाली जा सकती है। मैंने यह भी बता दिया था कि सुरक्षा की भावना तथा विश्वास पैदा करने के लिये मुझे कोई दूसरा ठोस रास्ता नहीं दिखाई पड़ता है। मालूम होता है कि आप इस सलाह का अर्थ यह लगाते हैं कि मैं आपकी सरकार की उपेक्षा करना चाहता हूँ। आपने मेरी सलाह का उचित अर्थ नहीं लगाया।

आपने ५ सितम्बर के अपने पत्र में हैदराबाद रियासत में जानमाल तथा सम्मान की अरक्षा का खण्डन करने के सिवा यह भी बताया कि हमारी सेना को आपके क्षेत्र में जाने की अनुमति देने का प्रश्न ही नहीं उठता।

जब तक आप ३१ अगस्त के मेरे पत्र में दिए हुये सुझाव के अनुसार कार्य करने के लिए तैयार नहीं हैं तब तक आपको सहायता पहुँचाना मेरे लिए असंभव है। मैं ऐसा अनुभव करता हूँ कि जब तक जनता में विश्वास पैदा नहीं हो जायगा—सुरक्षा की भावना उत्पन्न करना प्रथम कार्य है--क्योंकि तब तक काम बन नहीं सकता। मुझे दुख होता है कि आपको मेरी सलाह अस्वीकार करने की सलाह दी गई। यदि आप शांति की गारण्टी के लिए तथा शांतिपूर्वक समझौते के लिए दृढ़ निश्चय का प्रदर्शन करने के उद्देश्य से हमारी सेना को सिकन्दराबाद में पुनः जाने का आमन्त्रण देंगे तो अन्य प्रश्नों पर इससे कोई बुरा प्रभाव नहीं पड़ेगा। इसके विपरीत यदि आप भारत सरकार को इस दिशा में आगे बढ़ने के लिए बाध्य करेंगे तो अन्य मामलों पर इसका निश्चित रूप से बुरा असर पड़ेगा।

गवर्नर जनरल के उपयुक्त पत्र के पहले ता० ७ सितम्बर को देशी राज्य विभाग के सचिव श्री वी० पी० मेनन ने मीर लायकअली के नाम निम्नलिखित आशय का पत्र लिखा था।

प्रिय मीर लायकअली

समय समय पर भारत सरकार रजाकारों तथा उनसे सम्बन्ध रखने राज्य के अन्य लोगों द्वारा जनता पर किए जाने वाले अत्याचारों की ओर आपका ध्यान आकर्षित करती रही है। भारतीय क्षेत्रों तथा राज्य की सीमा में न केवल हिन्दुओं बल्कि विरोधी मुसलमानों पर भी होने वाले आक्रमण, गाड़ियों को रोक कर लूटना, हत्या, बलात्कार और लूट प्रायः

रोज की घटनाएँ हो गई हैं। इनके चलते न केवल हैदराबाद में व्यापक अराजकता फैल गई है बल्कि निकटवर्ती भारतीय क्षेत्रों में भी गम्भीर आशङ्का फैल रही है। रजाकारों की इन हरकतों से भारत की साम्प्रदायिक शांति भङ्ग होने का भी भय उपस्थित हो गया है। ऐसा प्रतीत होता है कि हैदराबाद सरकार इस रक्तपात और अराजकता को रोकने के लिए इच्छुक नहीं है और अब स्थिति इतनी गम्भीर हो गई है कि रजाकार सङ्गठन तथा उसकी बर्बरता को समाप्त करना आवश्यक हो गया है।

गवर्नर जनरल ने अपने ३१ अगस्त के पत्र में यह सुझाव रखा था कि शांति-स्थापना के लिए भारतीय सेनायें फिर से सिकन्दराबाद में तैनात की जांय। निज़ाम ने इसे अस्वीकार करते हुए कहा है कि राज्य की स्थिति बिलकुल साधारण है। भारत सरकार इसे मानने को तैयार नहीं है। इसके विपरीत उपद्रव और आक्रमण के विश्वसनीय समाचार नित्य प्रति मिल रहे हैं। अतः हम फिर आपसे अनुरोध करते हैं कि रजाकार सङ्गठन को भङ्ग कर दें और भारतीय सेनाओं को सिकन्दराबाद जाने की सुविधा दें। आशा है कि हैदराबाद सरकार इस अनुरोध को अविलम्ब स्वीकार कर लेगी।

आपका
वी० पी० मेनन

लायकअली का उत्तर पंडित जवाहरलाल के नाम—

देशी राज्य विभाग का ७ सितम्बर का पत्र मिला। रजाकारों के प्रतिभारत सरकार का रुख निज़ाम सरकार को ज्ञात है। किन्तु हमें इस बात का आश्चर्य है कि हैदराबाद की स्थिति के सम्बन्ध में भारतीय पत्रों में जो झूठे प्रचार हो रहे हैं उन्हें आधार मानकार भारत सरकार ऐसी मांगें कर रही है जिसके लिए कोई औचित्य नहीं है।

निज़ाम सरकार फिर अपना यह विचार दुहराती है कि रजाकार संगठन का जन्म सीमावर्ती भारतीय क्षेत्रों से होने वाले आक्रमणों के फलस्वरूप हुआ है। अतः उस पर प्रतिबन्ध लगाने से काम न चलेगा। बल्कि इसके लिये दोनों सरकारों के सहयोग से सीमावर्ती आक्रमणों को रोकना आवश्यक है। हमें खेद के साथ कहना पड़ता है कि प्रांतीय सरकारों तथा भारत सरकार ने इस मामले में कोई सहयोग नहीं दिया है। निज़ाम सरकार अब भी उसके लिये तैयार है।

६ सितम्बर को हुई कोडर की घटना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि अब आक्रमणों का कार्य केवल पड़ोसी जनता तथा भारतीय पुलिस तक ही सीमित नहीं रह गया है बल्कि भारतीय सेना भी अब पूर्व नियोजित ढंग से अकारण हमारे क्षेत्र पर हमला करने लगी है।

निज़ाम सरकार को भारत की इस मांग पर, कि सिकन्दराबाद में भारतीय सेना रहने दी जाय, और भी अधिक आश्चर्य है। हम इस बात को पहले ही स्पष्ट कर चुके हैं कि यथा स्थिति समझौता न होने पर भी १५ अगस्त ४७ के बाद भारतीय सेनाओं को सिकन्दराबाद से हटना पड़ता। अब दोनों देशों के बीच जो यथास्थिति समझौता चल रहा है उसमें भी यह स्पष्ट किया जा चुका है कि भारत हैदराबाद के आन्तरिक विषयों में तनिक भी हस्तक्षेप न करेगा। अतः निज़ाम सरकार भारत सरकार की इस मांग को बहुत गम्भीर समझती है। यदि भारतीय सेनायें सिकन्दराबाद में भेजी गईं तो इसका हैदराबाद और भारत दोनों में गम्भीर परिणाम होगा। आशा है कि भारत सरकार इससे परहेज़ करेगी।

आपका

लायकअली

श्री मेनन का अन्तिम पत्र ता० ११ सितम्बर

प्रिय मीर लायक़अली,

प्रधान मन्त्री के नाम भेजा गया आपका पत्र मिला। उससे ऐसा प्रतीत होता है कि निज़ाम सरकार तथ्यों को उनके वास्तविक रूप में न मानने के लिए कृत संकल्प है और दूसरों से अपनी ही बात मनवाना चाहती है। रज़ाकार आन्दोलन, कोदर की घटना, हैदराबाद में बाहर से होने वाले आक्रमण आदि की जो बातें कही गई हैं, वे सत्य से सर्वथा परे हैं हैदराबाद में इस समय कोई सभ्य क़ानून-व्यवस्था न होकर जङ्गल का क़ानून लागू है। रज़ाकार तथा उनके साथी राज्य की बहुसंख्यक जनता पर अकथनीय जुल्म ढा रहे हैं। ऐसी दशा में भारत सरकार यही समझने को बाध्य है कि निज़ाम सरकार वास्तविकता को मानने को तैयार नहीं है। साथ ही वह गवर्नर जनरल की उचित सलाह को भी मानने को तैयार नहीं है। ऐसी दशा में भारत सरकार हैदराबाद में शान्ति स्थापना के लिए अब जो उचित समझे करने को स्वतन्त्र है। इसका जो भी परिणाम होगा उसकी पूरी जिम्मेदारी हैदराबाद सरकार पर होगी।

आपका

वी० पी० मेनन

❀ ❀ ❀

उपर्युक्त अन्तिम सूचना के बाद ता० १३ सितम्बर को प्रातः चार बजे चारों दिशाओं से भारतीय सेनायें हैदराबाद में घुस पड़ीं और १८ सितम्बर को निज़ामी फौजों ने आत्मसमर्पण कर दिया। मीर लायक़अली और अन्य मन्त्री अपने घरों में नज़रबन्द कर दिये गए। कासिम रिज़वी गिरफ्तार कर लिया गया। निज़ाम ने संयुक्त राज्य संघ से अपने मामले को वापस ले लेने की प्रार्थना की और संसार के मुस्लिम देशों के नाम निम्नलिखित अपना वक्तव्य प्रकाशित किया:—

मुसलिम देशों के नेता और मित्रो:—

मीर लायकअली के मंत्रिमण्डल ने जिन प्रतिनिधियों को भेजा था वह अपने को हैदराबाद का प्रतिनिधि बतला रहे हैं और उन्होंने हिन्दुस्तान के विरुद्ध अपनी कार्रवाई जारी रक्खी है। परन्तु सच्ची बात यह है कि हिन्दुस्तान ने हमें फिर से हमारी स्वतन्त्रता दिला दी है जिससे मैं आसफ़जाही घराने की परम्परा को स्थिर रख सकूँ और हैदराबाद के हित के लिए राज्य के दुश्मनों को दण्ड दे सकूँ। इसलिये संसार के सामने आज मैं सच्ची घटनाओं को उपस्थित कर रहा हूँ। कुछ थोड़े से लोगों ने हैदराबाद के हितों के विरुद्ध एक लुटेरों का संगठन बना लिया था। गत नवम्बर में उन्होंने मेरे प्रधान मंत्री नवाब छतारी के वासस्थान को घेर लिया था। उक्त नवाब और अपने वैधानिक परामर्श दाता सर वाल्टर मॉकटन की राजनीतिज्ञता पर मुझे पूर्ण विश्वास था।

परन्तु इस हिंसक कार्रवाई से उन्होंने नवाब छतारी और मेरे दूसरे योग्य मंत्रियों को त्याग-पत्र देने के लिये विवश कर दिया। मेरे ऊपर लायकअली-मंत्रिमण्डल को जबरदस्ती लाद दिया गया। इस दल का नेता कासिम रिज़वी था। इन लोगों ने देश की सेवा में कोई भाग नहीं लिया था लेकिन जर्मनी की तरह हिटलरी हथकण्डों द्वारा उन्होंने रियासत पर क़ब्ज़ा कर लिया और जिन हिन्दुओं और मुसलमानों ने उनके सामने झुकना स्वीकार नहीं किया उन्हें बिना धार्मिक भेद-भाव के लूटा मारा। विशेषकर हिन्दुओं को उन्होंने अधिक लूटा और उनके घरों को जलाया तथा मुझे भी विवश कर दिया।

कुछ समय से मेरी यह बड़ी इच्छा थी कि हिन्दुस्तान के साथ उस सम्मानपूर्ण समझौते को करलूँ जिसके लिये वह तैयार था। लेकिन यह दल हैदराबाद को एक ऐसा इस्लामी राज्य बनाना चाहता था जिसमें केवल

मुसलमानों को ही नागरिक स्वत्व प्राप्त हो और मुझे हिन्दुस्तान के उस प्रस्ताव को अस्वीकृत कर देने के लिये मजबूर कर दिया गया जिसे उसने समझौते के आधार स्वरूप उपस्थित किया था।

मैं मुसलमान हूँ और मुसलमान होने का मुझे गर्व है। किन्तु मैं जानता हूं कि हैदराबाद हिन्दुस्तान से पृथक नहीं रह सकता। मेरे बाप दादों ने हिन्दुओं और मुसलमानों में कोई अन्तर नहीं रखा था और यहां इन दोनों सम्प्रदायों के राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक सम्बन्ध हिन्दुस्तान के दूसरे भागों से भी कहीं अधिक अच्छे थे। यह हमारी उसी नीति का परिणाम था जिस पर मेरे बाप दादे चलते आये थे और मैं भी बहुत दिनों तक चलता रहा।

आठ महीने से रज़ाकारों की सहायता से इस दल का बोलबाला था और इसने घोर साम्प्रदायिक वैमनस्य के वातावरण को क़ायम कर दिया था और दुर्भाग्यवश मैं अपने अधिकारों से वञ्चित होने के कारण इसे रोकने में असमर्थ था। परन्तु इस नाजुक खतरे के अवसर पर जो इन्हीं के कारण उपस्थित हुआ इस दल वालों ने हिम्मत हार दी और जब हिन्दुस्तानी सेनाएं हैदाराबाद से केवल चालीस मील की दूरी पर रह गईं तो मंत्रिमण्डल ने त्याग पत्र देकर इस विषम परिस्थिति का सामना करने के लिये मुझे अकेला छोड़ दिया।

मेरे आसपास मेरे पुराने और विश्वसनीय मुसलमान अफ़सर हैं जिन्होंने भिन्न-भिन्न पदों पर रहकर रियासत को दृढ़ और पुष्ट बनाने के हर प्रकार के रचनात्मक कामों को आगे बढ़ाने में तन मन धन से प्रयत्न किया है। मुझे भारतीय संघ से कोई डर नहीं। मैं जानता हूँ कि भारतीय संघ एक असाम्प्रदायिक प्रजातांत्रिक राष्ट्र है और इस बात को ध्यान में रखते हुए हैदराबाद जिसमें ८६ प्रतिशत हिन्दू बसते हैं कभी इस्लामी राज्य नहीं बन सकता। इस बीच सहस्रों सम्प्रदायवादियों को मेरी दौलत

और लूटपाट की लालच देकर बाहर से लाया गया था जिन्हें रियासत के भीतर स्वतन्त्र छोड़ दिया गया था और वह अभी तक काबू में नहीं आ सके हैं।

हिन्दुस्तानी सेना के सद्व्यवहार, सुव्यवस्था और दृढ़ अनुशासन के कारण हैदराबाद का शहर नष्ट विनष्ट होने से बच गया इस समय शासन व्यवस्था सैनिक गवर्नर के हाथ में है और मैंने अपनी प्रजा को उन्हें पूरी तरह सहायता देने के लिये चेतावनी दे दी है। वह भारतीय सेना के जनरल जे० एन० चौधरी हैं।

मैंने लायकअली मन्त्रि-मंडल द्वारा प्रेषित तमाम प्रतिनिधि मण्डलों को तोड़ देने की आज्ञा दे दी है और संसार के मुसलमानों को मैं सूचित कर देना चाहता हूँ कि वह स्वार्थियों के प्रचार के भुलावे में न आवें।

रजाकार पतन

※ पर ※

विदेशी पत्रकारों

—: की :—

चार दृष्टियां

न्यू स्टेट्समैन एण्ड नेशन—

जिस तेजी से भारत सरकार की सैनिक कार्यवाही समाप्त हुई है, उससे उसका औचित्य सिद्ध हो गया है। निजाम के सहायक साढ़े चार दिन से अधिक मुक़ाबिला नहीं कर सके। अधिकतर लोगों ने हिन्दुस्तानी सैनिकों का सहर्ष स्वागत किया, जिससे निज़ाम के दावे की निःसारता साफ़ प्रकट हो गई है। इस लड़ाई को किसी भी तरह हिन्दुस्तान और हैदराबाद की रियासत में लड़ाई नहीं कहा जा सकता। यह तो केवल वहां के राजा और उसके गुट्ट को दण्ड देने का कार्य था। अब जबकि यह स्पष्ट हो गया है, यह मामला निस्संदेह सुरक्षा समिति के कार्यक्रम से निकाल दिया जायगा और हमारे साम्राज्य के विच्छेद का प्रयत्न करने तथा सबसे अधिक शोर मचाने वाले अनुदार दल के लोगों को भी कोई भी बहाना बाकी नहीं बच रहेगा। लाचार होकर निज़ाम पर जो जबरदस्ती करनी पड़ी, खुश किस्मती से उससे हिन्दुस्तान में किसी तरह के साम्प्रदायिक झगड़े नहीं हुए, और न ही पाकिस्तान सरकार ने इसमें किसी प्रकार का हस्तक्षेप करने की ज़रूरत ही समझी। रिजवी की धमकियां भी व्यर्थ साबित हुईं और निजाम भी रजाकारों की झंझटभरी मदद से छुटकारा पाकर शान्ति से जीवन बिताने की आशा कर रहा है, क्योंकि रियासत में व्यवस्था क़ायम रखना अब हिन्दुस्तान का काम है। रियासत में अब नये विधान और जन-सत्ता के लिए रास्ता बन गया है। सम्भवतः

निजाम की सरकार के नये मेम्बर हिन्दुस्तान के अधिक मित्र होंगे। इससे टाइम्स का यह आक्षेप अनुचित है कि एक अवांछनीय पक्षपात की मनोवृत्ति सिद्ध होती है, अपितु यह स्थित हैदराबाद निवासियों के सच्चे भावों का प्रकाश करती है। हिन्दुस्तान की ताकत का ठीक इस्तैमाल होगा, यह पण्डित नेहरू के भाषण से साफ मालूम होता है, जिसमें उन्होंने वचन दिया है कि निर्वाचन उचित रूप से होगा और हैदराबाद की जनता को इस बात का पूरा अधिकार होगा कि वे अपने भावी सरकार का रूप निश्चित कर सकें। यह हो सकता है कि हैदराबाद की भावुकता जनता निजाम को ही अपना राजा बनाए रखना चाहे। और यदि ऐसा हुआ, तो हिन्दुस्तान को भी इसमें कोई एतराज नहीं होगा।

इकौनोमिस्ट, लण्डन—

हैदराबाद की सैनिक पराजय एक पूर्व-संभावित तथ्य था। एक ही सवाल था कि क्या संयुक्त राष्ट्र संघ, हिन्दुस्तान को ताक़त इस्तैमाल करने से रोकेगा? परन्तु ऐसा उक्त संघ ने नहीं किया। रक्षा समिति ने १३ सितम्बर को यह निश्चय किया था कि हैदराबाद की अपील, रक्षा समिति के कार्यक्रम में शामिल कर ली जायगी। परन्तु हिन्दुस्तान को हैदराबाद पर आक्रमण करने से रोके बिना ही रक्षा-समिति की बैठक चार दिन के लिए स्थगित कर दी गई, और उससे दूसरे दिन ही निज़ाम ने हार मान ली। अंग्रेज़ों के दृष्टिकोण से हैदराबाद के झगड़े के सम्बन्ध में तथा जिन उपायों से वह झगड़ा समाप्त किया गया है, स्पष्ट अन्तर है। यह ज़रूर है कि यदि हैदराबाद, हिन्दुस्तान की सीमा में एक स्वाधीन राज्य बना रहता, जिस पर अल्पमत का शासन होता, और भारत सरकार से उनका व्यवहार दुश्मनी का होता, तो इससे अंग्रेज़ों का कोई राजनैतिक, आर्थिक या स्ट्रेटेजिक लाभ नहीं था। उल्टे, अंग्रेज़ों को तो इसी बात से फायदा है कि हिन्दुस्तान एक स्थायी और भौगोलिक दृष्टि से ठोस ताक़त बना रहे। जो खरीते हैदराबाद सरकार ने छापे हैं, उनसे स्पष्ट है कि लार्ड माउण्टबेटन ने व्यक्ति गत रूप से निज़ाम को सलाह दी थी कि वह हिन्दुस्तान से मिल जाय। इसमें कोई शक नहीं कि यदि हिन्दुस्तान, निज़ाम की पेश की हुई शर्तों को अगली बातचीत का आधार बनाता।

न कि उसको धमकियां देकर उस पर ताक़त का प्रयोग करता तो निज़ाम पहले ही हिन्दुस्तान से मिल जाता। अंग्रेज जनता की राय ने उसी बात की निन्दा की है और ठीक निन्दा की है, कि एक रियासत को, जिसे एक्ट के अनुसार स्वाधीन रखा गया है। हिन्दुस्तान ने शक्ति के बल पर क्यों अपने अधीन कर लिया। इस देश मे हिन्दुस्तान के बारे में जो कटु आलोचना हुई है और जिसको हिन्दुस्तान ने बहुत बुरा बतलाया है, वह इसलिए नहीं कि इससे हमें कोई नुक़सान हुआ है या हिन्दुस्तानियों के खिलाफ़ यहां भाव हैं। परन्तु हमारा ख्याल है कि इस सैनिक आक्रमण से संयुक्त राष्ट्र संघ और इस सिद्धान्त को कि आपसी झगड़े शान्ति से निपटाए जांय, भारी आघात पहुंचा है। लड़ाई बेशक छोटी और स्थानीय थी, और इससे हर रोज की पेचीदा भारतीय राजनीतिक समस्यायें हल हो गई फिर भी इस तरह शक्ति के प्रयोग का परिणाम यह भी हो सकता है कि संसार में हिंसा की भावना को बल मिले, यद्यपि विश्व में इस समय शांति स्थापना करने की आवश्यकता है। लड़ाई आरम्भ करने की तो एक संक्रामक भावना है हम कोई हिन्दुस्तान पर देख रेख रखना या उसे शिक्षा देना नहीं चाहते। यदि और किसी देश ने भी ऐसा किया होता को हमारे अखबार उसकी भी निन्दा इसी तरह करते। हिन्दुस्तान को यह नहीं समझ लेना चाहिए कि साम्राज्य की सदस्यता का यह मतलब है कि किसी एक सदस्य देश के बुरे कामों पर दूसरे सदस्य देश अपनी आंखें बन्द कर लें। कामन वेल्थ का उद्देश्य यह होना चाहिए कि खास तरीक़ों से सदस्य-देशों के आपस के झगड़ों को निबटाने का प्रयत्न किया जाय न कि उसके हिंसक कार्यों का समर्थन। हैदराबाद की पूर्ति इस बात से हो जायेगी। यदि आने वाली कामन वेल्थ की कांफ्रेंस कोई संस्था बना दे जो भविष्य में इस तरह के झगड़े निबटा सके।

स्पेक्टेटर, लण्डन—

हिन्दुस्तान ने हैदराबाद पर अधिकार किया है, वे गांधी के निकट न होकर हिटलर के अधिक नज़दीक हैं। और उनसे हिन्दुस्तान की सेना को बहुत कम यश और उसके शासकों को बहुत अधिक अपयश मिला है। रियासत की सेनाओं ने बहुत कमज़ोर और असंगठित मुक़ाबला किया है। और इस वातावरण में यही एक संतोष की बात है कि सम्पूर्ण दक्षिण भारत में बहुत बड़े पैमाने पर साम्प्रदायिक झगड़े, कम से कम अभी तक नहीं हुए। यद्यपि गवर्नर जनरल की हिन्दुस्तान भर में असाधारण स्थिति की घोषणा से, इस तरह की हिंसा की संभावना स्पष्ट प्रकट होती थी। इस तरह की हिंसा नहीं हुई, यह तथ्य कितना ही वांछनीय क्यों न हो, तथापि इससे अपराध गुरुता कम नहीं होती। पिछले मङ्गलवार के जिस तरह हिन्दुस्तान के हाई कमिश्नर ने इस देश के (इंगलैंड) अखबारों के सम्बन्ध में इसलिए कड़ी आलोचना की थी कि उन्होंने हिन्दुस्तान के हैदराबाद पर आक्रमण करने की करीब करीब एकमत होकर निन्दा की, वह नितान्त अनुचित था। यद्यपि, संयुक्त राष्ट्र संघ के हैदराबाद की अपील से अब कोई बहुत लाभ होने की सम्भावना नहीं है। तथापि यह अभी तक सुरक्षा समिति की कार्यवाही में सम्मिलित है। हैदराबाद की परिस्थिति इस समय शान्त है। इस सब की क्षतिपूर्ति के रूप में हिन्दुस्तान सब से अच्छी बात यह कर सकता है कि हैदराबाद में नई सरकार, जनता की इच्छा के अनुसार बनाने का गम्भीर तथा सच्चा प्रबन्ध किया जाय। परन्तु हिन्दुस्तान का इस समय तक का व्यवहार बहुत कम विश्वास उत्पन्न करता है।

'टाइम' शिकागो (अमेरिका)—

हमारे सम्वाददाता रॉबर्ट ल्यूबर और लाइफ के सम्वाददाता ने हैदराबाद और हिन्दुस्तान का युद्ध देखने के लिए सन १९३५ की बनी हुई एक फोर्ड गाड़ी किराए पर ली। इस युद्ध को हिन्दुस्तान की फौज "पोलीस एक्शन" कहती थी। क्योंकि हैदराबाद की बहुमत आबादी अर्थात वहां के हिन्दू निवासियों पर एक ज़िद्दी मुसलमान निज़ाम शासन कर रहा था। हमारे सम्वाददाता खूब तेज़ी से गाड़ी चलाकर १८० मील गए, परन्तु जब वह युद्ध-स्थल पर पहुंचे तो युद्ध समाप्त हो चुका था। हमारे सम्वाददाता का कहना है कि सब मिलाकर, यह संसार के इतिहास का एक सबसे छोटा और सब से अधिक प्रसन्नतादायक युद्ध था।

सब कोई संतुष्ट है। हिन्दुस्तानी लोकमत के उग्रदल के लोग भी खुश हो गये हैं। हैदराबाद, जो कभी हिन्दुस्तान से बाहर नहीं रहा, अब निर्विवाद रूप से हिन्दुस्तान का भाग बन गया है। वहां कोई साम्प्रदायिक खून खराबी नहीं हुई। निजाम, जिसने केवल चार दिन और १३ घण्टों के बाद ही आत्म समर्पण कर दिया, फिर भी इस बात से संतुष्ट है कि उसने कम से कम एक नाम मात्र की लड़ाई तो लड़ ली। हिन्दुस्तानी सेना नायक महाराज राजेन्द्रसिंह जी ने कहा—"हम किसी भी ऐसे आदमी को तंग नहीं करना चाहते, जो क़ानून पर चलता हो।" इसमें संभवतः हैदराबाद की सेना भी सम्मिलित है। हताहतों की संख्या बहुत ही कम है। सिर्फ बारह हिन्दुस्तानी सिपाही इस युद्ध में मारे गये।

इस पर भी हिन्दुस्तान के उत्सुक युद्ध सम्वाददाता इस तरह की रिपोर्ट अपने पत्रों में भेजते रहे हैं—"निज़ाम के क़िलाबन्दी वाले शहर ताश के पत्तों की तरह गिर रहे हैं" इन रिपोर्टों में यह नहीं कहा गया कि यह शानदार क़िले पन्द्रहवीं सदी में बनाए गये थे।

हमारे सम्वाददाता का कहना है कि हैदराबाद की सीमा में हिन्दू किसानों ने हमारा स्वागत किया, जो स्पष्टतः भारतीय सेनाओं के आक्रमण से बहुत ही प्रसन्न दिखाई देते थे। नालदुर्ग कैम्प में जहां हमने सुबह का कलेवा लिया। बहुत से सैनिक एक रेडियो के चारों तरफ बैठकर निज़ाम का आत्म समर्पण वाला भाषण सुन रहे थे। मेरे पूछने पर एक सिपाही ने इस भाषण का सार इस तरह बताया:—

"निज़ाम को अफ़सोस है वह हमारा मित्र बनना चाहता है।" सड़कों के किनारे कहीं भी लड़ाई का कोई चिन्ह नहीं था। किसान खेत बो रहे थे, जानवर चर रहे थे, लोग पेड़ों के नीचे आराम मे सोये हुए थे। बहुत कम लाशें हमारे देखने में आई। कहीं कहीं हैदराबादी सेना के ट्रक उलटे हुए ज़रूर दिखाई दिए। होमनाबाद में हिन्दुस्तानी फौज ने हमें एक खास क़ैदी दिखाया, जो वहां के रजाकार संघ का मन्त्री था। वह अपने नेता कासिम रिज़वी से बिलहुल मिलता था—सिर्फ़ उसकी आंखों में वह आग नहीं थी। वह लड़ाई समाप्त होने से एक दिन पहले अपने हाथ में तलवार लिये हुये गिरफ्तार हुआ था। अब वह बहुत घबराया हुआ और परेशान दिखाई देता था। उसने धीरे से कहा—"रिज़वी ने हमें धोखा दिया है।"

सिकन्दराबाद से सिर्फ़ पांच मील दूर हैदराबाद की सेना ने आत्म-समर्पण किया। एक चमकती ब्युक गाड़ी से हैदराबाद की सेना का अध्यक्ष मेजर जनरल सैयद अहमद एल० अद्रूस नीचे उतरा, जिसने सिर्फ़ एक महीना पहले स्वयं मुझसे कहा था कि "हम अखीर तक लड़ते रहेंगे।"

मजर जनरल चौधरी से मिलने के लिए वह आगे बढ़ा। उन्होंने हाथ मिलाये, सिगरेटें सुलग गईं और धीरे धीरे बातें शुरू कीं, जबकि गांव के लोग मुग्ध होकर उन्हें देखते रहे। चौधरी ने कहा "तुम्हें रजाकारों को समाप्त कर देना होगा।" एल० अद्रूस ने स्वीकृति में सिर हिलाया। वह उस समय कुछ पीला दिखाई दे रहा था। उसे हैदराबाद शहर पर भी निगरानी रखने को कहा गया। चौधरी ने उससे कहा "देखना वहां कोई शरारत न होने पावे।"

और सचमुच वहां कोई शरारत नहीं हुई। हैदराबाद शहर की सड़कों पर मौत सा सन्नाटा छाया हुआ था। मुसलमान डरे हुये थे। कुछ ने अपने मकान के दरवाजे और खिड़कियां भी बन्द कर रखी थीं। हफ्तों से उन्हें ये अफवाहें सुनाई जा रही थीं कि हिन्दुस्तानी सिपाही रजाकारों के मुँह में बारूद भरकर उन्हें उड़ा देते हैं। ऐसे लोगों में विश्वास उत्पन्न करने में कुछ समय लगेगा।

निज़ाम की ताकत समाप्त हो गई है। उसके मन्त्री घर में कैद हैं। परन्तु संभवतः निजाम को अपना खजाना मिल जायगा। कासिम रिज़वी की किस्मत इससे अधिक खराब है। आत्म समर्पण के प्रातः काल उसने अपने अनुयाइयों से कहा—मैं अब तुम्हारे सामने अन्तिम बार बोल रहा हूँ। और उसके बाद वह गायब हो गया। अगले दिन हैदराबाद की सेना ने उसे गिरफ्तार कर लिया। उसने कहा—"मैंने जुआ खेला था और मैं हार गया।"

पराजित सेनापति एल० अद्रूस ने बड़े दार्शनिक ढंग से मुझ से कहा "यह ज़िन्दगी का खेल है। हमने अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश की थी।"